विजय हमारी है

[बीकानेर के हिन्दी, उर्दू एवं राजस्थानी कवियों की
वीर रसात्मक कविताओं का संकलन]

'संहिता' द्वारा सम्पादित

प्रकाशक
नवयुग ग्रन्थ कुटीर
बीकानेर : राजस्थान :

'संहिता' की ओर से

१५ अगस्त १९६५ के शुभ पर्व पर संस्थापित, प्रबुद्ध साहित्यकारों की संस्था 'संहिता' राष्ट्र-जागरण की इस पुनीत वेला में 'विजय हमारी है' नामक इस काव्य-संकलन को नवयुग ग्रन्थ कुटीर के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए अपने सारस्वत अस्तित्व को व्यक्त कर रही है।

साहित्यिक एकता, रचनात्मक साहित्य-सर्जना एवं लोक-जागृति के साथ-साथ प्रस्फुटनशील साहित्यांकुरों के सम्यक् संवर्धन की दिशा में अग्रसर 'संहिता' का संचालन-मण्डल इस प्रकार गठित है–

संचालक	प्रो. पुष्कर शर्मा
मुख्य-सचिव	श्री ओंकार पारीक
प्रकाशन-सचिव	प्रो. मदन केवलिया
गोष्ठी-सचिव	प्रो. शिवराज छंगाणी
कोषाध्यक्ष	डॉ. प्रभाकर शास्त्री
सहवरित सदस्य	श्री गौरीशङ्कर 'अरुण'
	श्री धर्मेश शर्मा

विश्व के महान धर्म-निरपेक्ष एवं शान्तिप्रिय गणतन्त्र भारत की सार्वभौमिक अखण्डता के लिए संघर्षरत जवानों एवं दिवंगत वीरात्माओं के प्रति श्रद्धानत सरस्वती-पुत्रों का यह जयघोष 'विजय हमारी है' के माध्यम से देश की अप्रतिहत शक्ति एवं सामर्थ्य का सशक्त प्रतीक बनकर जन-मन-गण को बहुशः तरङ्गित कर सके, यही हमारी अभिकांक्षा है।

'संहिता' द्वारा संपादित यह संकलन समष्टिगत दायित्व एवं सहयोग की दिशा में एक स्वस्थ परम्परा का परिचायक सिद्ध होगा, इस आस्था एवं दृढ़ विश्वास के साथ 'संहिता' के भावी प्रकाशनों और सामयिक गोष्ठियों के आयोजनों में भी उद्बुद्ध साहित्यस्रष्टाओं का सक्रिय सहयोग आमन्त्रित तथा अभ्यर्थित है।

'संहिता-परिवार' संकलन के सहयोगी कवियों तथा इसके प्रकाशक 'नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर' के प्रति मात्र औपचारिक धन्यवाद की अपेक्षा हार्दिक कृतज्ञता का ज्ञापन अधिक उपयुक्त एवं सर्वथा संगत समझता है।

ओंकार पारीक	मदन केवलिया	पुष्कर शर्मा
मुख्य-सचिव	प्रकाशन-सचिव	संचालक

अनुक्रम

सच्चाई हमारे साथ है; न्याय हमारे हाथ है,
जीत हमारी है और होकर रहेगी !

शानदार यादगार !

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा

महात्मा की वाणी !

मैं शांति का समर्थक हूं, परन्तु शांति को मैं किसी भी मूल्य पर स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं। मैं वह शांति नहीं चाहता, जो पत्थरों में पाई जाती है, अथवा कब्रगाह में मिलती है। जहां कायरता और हिंसा में से एक को चुनना हो तो मैं हिंसा को चुनने की ही सलाह दूंगा। —मो० क० गांधी

तुम मुझे खून दो,
मैं तुम्हें आजादी दूंगा
—नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

वीरों की मौत

लड़ाइयां बड़ी भयङ्कर होती हैं, इससे लाखों लोग मरते हैं। बड़ा विनाश होता है। बावजूद इसके सभी एक दिन मरते हैं और किसी महान उद्देश्य को पूरा करने में हमें समय से कुछ पहले मरना पड़े तो यह दुःख की बात नहीं है। हमें वीरों की तरह मौत का सामना करना है।

—जवाहरलाल नेहरू

प्रजातंत्र के लिए

प्रजातंत्र के हित की दृष्टि से हमारी विजय आवश्यक है, अन्यथा एशिया में आजादी का चिराग बुझ जाएगा।
—राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन्

शहीद का सन्देश

पार्थ को कहो चढ़ावे बाण
विधि का यही एक निर्माण
अब तो युद्ध से ही है कल्याण

[गुजरात के मुख्य मंत्री स्व. बलवंत राय मेहता का अन्तिम सन्देश एन. सी. सी. के होनहारों के नाम]

विजय हमारी है !

ओंकार पारीख

कवि-परिचय

नाम : ओङ्कार पारीक

जन्म तिथि : २३ मार्च १९३४

स्थाई पता : सोनगिरी कुवा, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : १. 'जय सहयोग' (गीत-संग्रह)
२. सहकारिता से ग्रामस्वराज्य (पुस्तिका)
३. सहकारिता से समाजवाद (,,)
देश-प्रदेश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित लेखन, आकाशवाणी जयपुर केन्द्र से सम्बद्ध ।

प्रेरणा के स्रोत : स्वतः प्रेरित
स्व. सूर्यकरणजी पारीक की साहित्यनिष्ठा व ज्येष्ठ बन्धु श्री परिकर एम. ए. की साधना ने मुझे उत्प्रेरित किया। आजाद हिन्द फौज के तरानों ने मेरे काव्य-मानस को निःसन्देह झकझोरा है।

आज उगलता आग 'पंचनद'
'गङ्गा' में उठ रहा उफान
'कल्हण' की केशरिया धरती
मांग रही बलिदान—
देश के जागो वीर महान !

'पानीपत' 'प्लासी' की गाथा
'रणत भवर' गूजे जयगान
'हल्दी घाटी' आज पुकारे
'जयइकलिंग' 'जयहिंद' जवान !
'बिल्हण' की कुन्दनिया धरती
मांग रही बलिदान—
देश के जागो वीर महान !

आज शहीदी शोणित से फिर
लिखा गया 'पीथळ' फरमान
'भूषण' 'गङ्ग' 'चद' की कलमें
तुम्हें जगाती उठो सुजान
जनमन गण को धरा सनातन
मांग रही बलिदान—
देश के जागो वीर महान !

आज 'शिवा' का जोश जगा है
पर्व मरण का, करो प्रयाण
'छत्रसाल' हुँकार रहा है
जागो मेरे हिन्दुस्तान
'लल्लन' की चन्दनिया धरती
मांग रही बलिदान
देश के जागो वीर महान !

'रवि' किरणें 'अङ्गार' बरसतीं
'वल्लतोल' की गूंजी तान
'गालिब' की गजलें गरमाईं
जगा 'भारती' का अभिमान
'कम्बन' की कश्चनिया धरती
मांग रही बलिदान
देश के जागो वीर महान !

आज 'द्वारिका' 'रामेश्वर' से—
'हिमगिरी' से आया आह्वान
'अमरनाथ' आवाज लगाता
आजादी खतरे में आन
'रघुनन्दन' रिपुदमन हेतु फिर
मांग रहा बलिदान
देश के जागो वीर महान !

'विजय हमारी है' यह सुनलो
रहे अटल भारत का मान
सत्य और संस्कृति के रक्षक !
धर्मयुद्ध हित दो बलिदान
'यदुनन्दन' फिर कुरुक्षेत्र का
मांग रहा बलिदान
देश के जागो वीर महान !

मेरा वतन

ख़लील समदानी बीकानेरी

कवि-परिचय

नाम : शेख् लुलोल अहमद समवानी लुलोल

जन्म तिथि : सन् १९०६

स्थायी पता : आज़ाद मनज़िल, मोहल्ला सवकान, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : मजमुआऐ कलाम अब जल्द शाया होने वाला है वैसे अक्सर उर्दू और हिन्दी के रिसालों में कलाम छपता रहा है।

प्रेरणा के स्रोत : शेर गोई से मुझे बचपन ही से लगाव रहा है। शायरी मुझे विरसा में मिली है-मेरे वालिद शेख् मोहम्मद इबराहीम साहब 'आज़ाद' मुरफाऐ बीकानेर के मोहतरम कामयाब और नामवर वकील और चीफ जज रहे। अदब व शायरी में आपको इमतियाज़ हासिल है। हकीकत है कि बीकानेर को सर ज़मीन में सुखन फेहमी व सुखन गोई का पौधा 'आज़ाद' साहब की ज़ेर सर परस्ती परवान चढ़ा-ईलमी मजालिस और मुशायरे आज़ाद मन्ज़िल की वोह यादगार हैं जिनको भुलाया नहीं जा सकता। मैं इसी फज़ा मे पला और मशके सखुन करता रहा। मेरी शायराना फितरत को नशो नुमा के लिए यह बेहतरीन माहौल रहा। पेशे के एतबार से मैं एडवोकेट हूँ। बस इतना तअर्रुफ फिलहाल काफी है।

ग़ैरते-फ़िरदौस है भारत मेरा प्यारा वतन,
रश्के-गुलज़ारे-ईरम भारत का हर दश्तो-दमन,
ज़र्रा-ज़र्रा है ज़मीने-हिन्द का लाले यमन,
आबे-शीरीं से यहां सेराब हैं गङ्गो-जमन,
हैं अहिंसा के पुजारी-खूगरे-अमनों-अमां !
बन्दाऐ-मेहरो-मुरव्वत साहिबे-तेग़ो-सिनां !!

मरद होते हैं जो मिटते हैं वतन की आन पर,
देस पर अपने खुशी से खेलते हैं जान पर,
सूरमा क़ायम सदा रहते हैं अपनी शान पर,
हां जवानाने-वतन छा जाओ पाकिस्तान पर,
पाक की हस्ती है क्या इस पाक में क्या जान है !
जिन्दगी उसको अजीरन मौत का अरमान है !!

हम यहां सब एक हैं हुब्बे-वतन ईमान है,
चप्पा-चप्पा अपने भारत का हमारी जान है,
जो वतन पर जान देता है वही इनसान है,
हिन्द के शेरों से टकराना भला आसान है,
मौत को देना है दावत है क़ज़ा का सामना !
सामने मरदों के आना है बला का सामना !!

चीन के चकमे में पाकिस्तान है आया हुवा,
चीने हीलासाज़ के बूते पे इतराया हुवा,
हमसे लड़ने आ गया बद वक़्त बहकाया हुवा,
आ गया सर में खलल-आसेब का साया हुवा,
वाह कैसा इनक़िलाब आया है क्या बदला निज़ाम !
अल्ला-अल्ला मेंडकी को भी हुवा मारों ज़ुकाम !!

हैफ़ पाकिस्तान से रुखसत हुऐ अक़लो शरूर,
चीनीयों की चाल में आकर हुवा उसको गुरूर,
हमने टुकड़ा क्या दिया-हमसे हुवा जुरमो-कुसूर,
अब ज़मीं अपनी नज़र आती है उसको दूर-दूर,
अपनी बरबादी उसे मुतलक़ नहीं मद्दे-नज़र !
लो कज़ा आई-निकल आये हैं अब चियूंटी के पर !!

क्या हक़ीक़त है तेरी ताक़त से टकराता है क्यूं,
बल निकल जायेगा आखिर इतना बल खाता है क्यूं,
यह ज़रा सी जान है-इस जान से जाता है क्यूं,
सामने शेरों से लड़ने के लिए आता है क्यूं,
जंग को तू खेल समझा है समझना चाहिये !
कैसी नादानी है मरदों से उलझना चाहिये !!

खाल मे रह खाल मे क्यूं खाल खुजलाती है अब,
वादीये कशमीर में तुझको कज़ा लाती है अब,
इनतिज़ारे-मोत कर-आती है अब-आती है अब,
हां बदल कर भेस तुझको देस बहकाती है अब,
दुशमने-होशो-खिरद अपनी हक़ीक़त को ना भूल !
खाक में मिल जायगी यह आबरू इतना ना फूल !!

लड़ने आया भी तो भारत के जवां जीदार से,
कैसे बच कर जायेगा अब तू कज़ा के वार से,
क्यूं हमारे हाथ रगवाता है खूने ज़ार से,
क्या लड़ें - कमज़ोर पाकिस्तान से बीमार से,
जा निकल कशमीर से इसमें ही तेरी खैर है !
वरना क्या धाक है तबाही में तेरी क्या देर है !!

कहते राम रहीम
जंगखोरों का नाम मिटादो !

बलभेश दिवाकर

कवि-परिचय

नाम : वल्लभेश दिवाकर

जन्म तिथि : २४ अप्रेल १९३१

स्थाई पता : साले की होली, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : 'नई वाणी' 'मैं गीत सुनाता जाऊंगा'
सिने-गीतकार

प्रेरणा के स्रोत : स्वयं-अन्तर्भूत

कहते राम रहीम जङ्गखोरों का नाम मिटादो !
भारत है बेदाग यह दुनिया को पैगाम सुना दो !!

लड़ो लड़ाई ऐसी भाई मिलजुल कर इस बार,
कभी न कोई उठा सके फिर भारत पर हथियार,
वीर हैं हम हर जीत पे पहला अपना है अधिकार,
हर गद्दार का छेदो सीना भरके प्रबल हुँकार,
वेहक को जो बात करे उसका धनधाम मिटादो।

कहते राम रहीम जङ्गखोरों का नाम मिटादो !
भारत है बेदाग् यह दुनियां को पैगाम सुनादो !!

कहदो यह ललकार के हम हैं वेद कुरान के हामी,
उसे न जीने देंगे थोपे जो हम पर बदनामी,
वैसे बन सकते हैं हम, हर नेक के पथ अनुगामी,
बदनीयत के दुश्मन, सच्चे आचरणों के स्वामी,
जागो ! जुल्मी जङ्गबाज को मौत का जाम पिलादो।

कहते राम रहीम जङ्गखोरों का नाम मिटादो !
भारत है बेदाग् यह दुनिया को पैगाम सुनादो !!

आओ हम सब मिलकर करदें उनका आज सफाया,
मातृभूमि की इज्जत पर है जिसने हाथ उठाया-
आज नहीं सोचेंगे हम यह क्या खोया क्या पाया,
बलिवेदी पर जो कुछ था वह देश के लिए चढ़ाया,
हम हैं जिस अंजाम के हामी वह अंजाम दिखादो।

कहते राम रहीम जङ्गखोरों का नाम मिटादो !
भारत है बेदाग़ यह दुनियां को पैगाम सुनादो !!

स्वीकारो आह्वान शहीदों का जागो स्वीकारो,
जो घबराये साथ न आए उन सब को धिक्कारो,
ललकारो दुश्मन को जागो आगे बढ़ ललकारो,
मारो उनको जो अपनी सीमा को लांघे मारो,
हर रावण के अपने मन का जागा राम दिखादो।

कहते राम रहीम जङ्गखोरों का नाम मिटादो!
भारत है वेदाग़ यह दुनियां को पैगाम सुनादो!!

बोही मायड़ साचौ सपूत

सूर्यशङ्कर पारीक

कवि-परिचय

नाम : सूर्यशङ्कर पारीक

जन्म तिथि : १९७९ वि० मार्गशीर्ष (१३-दिसम्बर २२ ई.)

स्थायी पता : भारतीय विद्यामंदिर शोध प्रतिष्ठान, रतन बिहारी पार्क, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : जीव समझोतरी (संपादित) सबोधो (संपादित), सिद्ध चरित्र, (जसनाथी संप्रदाय के साहित्य व परंपरा का शोधपूर्ण ग्रंथ) विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में शोध एवं मौलिक रचनाएं प्रकाशित।

प्रेरणा के स्रोत : जसनाथी साहित्य, संत साहित्य, लोक साहित्य ही मेरे प्रेरणा-स्रोत हैं।

वोही मायड़ साचो सपूत, जिण रै हिवड़ै देश वसै।
वोही मायड़ साचो सपूत, आजाद देश नै करण खमै॥

वोही मायड़ साचो सपूत, नसनस में जिण रै देश रसै।
वोही मायड़ साचो सपूत, हित सोच देश रो आप नसै॥

ओ जोश जवानी रो सोचो, सोचो तो काया काची है।
काची काया गळमळ जासी, हित देश छोड़ क्यो राची है॥

मरणैं सूं डरणूं सोचो तो, के! अमर हुवै काया माची।
हित देस मरया मरणू वांको, पूछो तो अमर हुया साची॥

जे अमर होण की आंछा है, देसड़लो जीणू राखो।
तो हंसी खुशी में मरो वीर, थे कायरता सिर सूं नाखो॥

घर देश धीर थे मरो वीर काटो बन्धन वेगो माको।
दुख उमड़ पड़ै काला बादल, तो के थे लारै झांको ताको ॥

घर जावै जे ! जा विपता घेरे सङ्ग छोड़ देवै सारो परिवार।
तिस मुख मरघो काया सूकै, दुख सहन करूं दस लाख हजार ॥

सोच्यां तो दुख पांता आया जिण-जिण नै देश कियो उपकार।
वै निरा पह्न हित देस देख, दुख देख कियो ना हिय विचार ॥

वो शिवा वीर राणू प्रताप, फिर फिर घाटी दुखडो झेल्यो।
वै गोविंद रा दोनूं गुमान हित, सोच मरण नाटक खेल्यो ॥

जळती झाल्या में कूद पड़या, ना अड़या लड़या वो दिया प्राण।
वो मरघो वीर पाबू राठोड़, वो मरघो वीर गोगा चाहूण ॥

थे रणबङ्का साचा सपूत, मोत्यां विचली लाला खरी।
आजाद करो आजाद करो, तूं भारत भू आजाद करो ॥

एक ही आवाज आती ····!

प्रो. पुष्कर शर्मा एम. ए.

कवि-परिचय

नाम : प्रो. पुष्कर शर्मा

जन्मतिथि : २१ अप्रैल, १९२७

स्थायी पता : अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, डूंगर कॉलेज, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : १ कतिपय हिन्दी कविताएं तथा कहानियां;
२. मल्हार (हिन्दी महाकाव्य) के कुछ अंश;
३. हिन्दी, संस्कृत, व राजस्थानी विषय के शोध निबन्ध;
४. संस्कृत गद्य विहार

प्रेरणा के स्रोत : १. हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, फ्रेंच तथा रूसी आदि भाषाओं के साहित्य का सतत अध्ययन एवं मनन;
२. भारत के विभिन्न प्रदेशों के अवलोकन से अन्तस्तल में नवीन सौंदर्य-बोध की सृष्टि;
३. अभिव्यक्ति की इच्छुक सार्वदिक भावनाओं की आकुलता;
४. स्वकीय अन्तराल में व्याप्त ऊहापोह एवं संघर्ष से उत्पन्न प्रकाश की रेखाएं मेरी रचनाओं की प्रेरणा के स्रोत रही हैं।

आज भारत को खड़े होकर
एक स्वर से
विश्व के सम्मुख
यही है घोषणा करनी—

" आज दुश्मन ने किया आक्रान्त हमको,
आज है कश्मीर की सीमा सभी अतिक्रान्त ।"

आज भी दुश्मन वही है
कई बरसों पूर्व जिसने आक्रमण कर
स्वर्ग-सम कश्मीर की पावन धरा पर
कदम रखने की
बड़ी नापाक हरकत कर दिखाई थी,

आज भी कश्मीर में के कुछ भाग पर
वह अनधिकृत कब्ज़ा जमाए;

अब वही दुश्मन
लड़ाकू जेट,
पैटन टैंक लेकर
हड़पना कश्मीर को चाहे,
हड़पना कच्छ को, पञ्जाब को चाहे,
पर नहीं इस बार
दुश्मन भाग पाएगा
सहज ही छूट जाएगा,

भारतीयों में सहन की शक्ति है
यह सत्य है,
पर जरूरत हो,
दमन की शक्ति भी उनमें;

आज सीमा पर हमारे नौजवानों ने
दांत खट्टे कर दिए हैं दुश्मनों के
आज भारत के निवासी एक हो
समवेत स्वर से
कर चुके हैं
आततायी को भगाने
नष्ट करने की प्रतिज्ञा;

आज हिंसा पर उतारू आततायी,
खेलनी उससे हमें अब
खून की होली;

जङ्ग की धमकी,
जिहादों के सदा पैगाम
आज भी दुश्मन सुनाता
विश्व भर को,
अस्त्र-शस्त्रों को सदा झनकारता रहता,
जङ्गबन्दी को खिलौना समझता वह,
शान्तिप्रिय इस देश पर चढ दौड़ता वह
वह समझता है इसे अधिकार अपना,
जब जहाँ चाहे
किसी भी देश से लड़ना,
पिट-पिटाकर
सिटपिटा, बेशर्म होकर
बात फिर मध्यस्थ की करना
जङ्गबन्दी की दुहाई विश्व को देना;

पर नही इस बार ऐसा हो सकेगा
अब उसे मालूम होगा यह
कि सपने सच नहीं होते
कि मन्सूबे धरे रहते
इरादे भी धरे रहते;

आज उसकी फौज में ताकत पराई
आज उसकी योजनायें सब पराई
वह भुला बैठा
पराए शस्त्र से कब तक लड़ेगा
पराई बुद्धि भी कब तक चलेगी;

कहीं फिर रुक नहीं सकता
सहन वह कर नहीं सकता
किसी का आक्रमण
किसी का अतिक्रमण;

याद रक्खे वह
कि भारत में बड़ी ताकत
बहुत है जोश युवकों मे
जवानों में
हमारे कारखानो मे
एक ही आवाज आती
अब घरों से
मन्दिरों से
मस्जिदों से
साथ ही गिर्जाघरो से
" देश की रक्षा हमें करनी,
देश का सम्मान हमको है बचाना ।"

ओ मेरी धरती के लोगो !

हरीश भादानी

कवि-परिचय

नाम : हरीश भादानी

जन्मतिथि : ११ जून १९३३

स्थाई पता : ५, डागा बिल्डिंग, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : अधूरे गीत
सपन की गली
हँसिनी याद की

प्रेरणा के स्रोत : यथावत् जीवन

मेरी झीलों के पानी को,
चांदी के शिखरों को
सोनलिया टीलों को

मेरी धरती के लोगो !
तुम न हिन्दू हो न मुसलमां हो
न काले हो न गोरे हो
तुम केवल हिन्दुस्तानी हो,
रङ्ग-जातियां-धर्म समाहित
इस मिट्टी-पानी में
तुम केवल हिन्दुस्तान हो
तुम एक देश के लिए लड़ो !
इतिहास बनाने की खातिर
अपने भविष्य के लिए लड़ो

मेरी धरती के लोगो !

मैं कवि आवाज देता हूं !

लालचन्द 'भावुक'

कवि-परिचय

नाम : लालचन्द 'भावुक'

जन्मतिथि : २५ जनवरी १९३८ ई०

स्थाई पता : लालचन्द 'भावुक', रत्तानी व्यासों का चौक, बेरासरियों की गली, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : मुख्यतः 'सेनानी' साप्ताहिक बीकानेर में गीत, कविताएं व मुक्तक। 'अधिकार' साप्ताहिक व 'अमर ज्योति' साप्ताहिक पत्रों में एवं 'राजस्थान-स्टेण्डर्ड' कलकत्ता, 'शिक्षा ज्योति' एवं 'शिक्षा लोक' मासिक में नियमित लेखन।

अप्रकाशित साहित्य : 'अपना मुंह देखो' [काव्य संग्रह]

प्रेरणा के स्रोत : मैं नहीं जानता कौन प्रेरणा
मुझ से गीत लिखाती है।
मैं नहीं जानता कौन रोशनी,
आकर दीप जलाती है!
मैं परवाना इस धरती का—
एक लक्ष्यहित जलने वाला।
नहीं जानता शमां कौनसी
जलना मुझे सिखाती है?

मैं कवि आवाज देता हूँ, तुम्हें विश्वास से—
हर बदलती जिन्दगी की, आस मेरे पास है।
विजय जिसके चरण चूमेगी, बड़े हो गर्व से—
इस सत्य के उल्लास का, उद्घोष मेरे पास है।

सरहदों पर बदतमीजी, कब तलक सहते रहेंगे ?
शान्ति की बात साथी, कब तलक कहते रहेंगे ?
कब तलक हम दुश्मनों के, वार सब सहते रहेंगे ?
कब तलक आदर्श को हम, साथ ले बहते रहेंगे ?

तम-घिरी सीमा समूची, कर रही उपहास है।
हर तड़पती बिजलियों को, अब तुम्हारी आस है।
इस धरा की घुटन अब तो, देख सकते है नहीं हम।
सींचे शोणित के बिना, हम तोड़ सकते हैं नहीं भ्रम।

इसलिए आह्वान करता हूँ, तुम्हें मैं गर्व से—
हर उबलते रोष का आक्रोश मेरे पास है।
मैं कवि आवाज देता हूँ, तुम्हें विश्वास से—

तुम उठे गर इस धरा हित, तो मौत भी शर्मायगी।
कदम तेरे गर उठे, तो भू स्वयं कम्पायगी।
वह धरा धंस जायगी, हर मोर्चा ढह जायगा।
तू बना शङ्कर अगर तो, काल तक घबरायगा।

है अगर गैरत वतन की, तो वतन के साथ चलना।
हर कदम पर छलकपट, झूठ का सर कुचलना।
मौत होगी सामने, सर ले हथेली पर निकलना।
मौत खुद देखेगी तेरे, कोष का खुलकर मचलना।

इसलिए मैं आज कहता हूं, तुम्हें सब भूलकर—
सौंप दूंगा मैं तुम्हें सारा चमन, मधुमास मेरे पास है।
मैं कवि आवाज देता हूं, तुम्हें विश्वास से—

अब बढो ऐसे कि तुम तक, मौत भी आने न पाए।
खून का कतरा तुम्हारा, रङ्ग गुलशन का खिलाए।
जिन्दगी से मौत तक भी, श्रमिक बन श्रमकण चढ़ाएं।
खेत श्रोर खलिहान सबके, अन्न उत्पादन बढ़ाएं।

खुल के कहदो खा कसम अब, भारती के भाल की।
इस मेरे अहले-वतन से, गर किसी ने चाल की।
तो समझ लो, हम उसीका नाम तक छोड़े नहीं।
जिन्दगी का एक क्षण भी, चैन से तोड़ें नहीं।

लो उठो सीमा सम्हालो, सरपे फिरसे कफन डालो।
शत्रुओं के मोर्चों पर, दहकते गोले उछालो।
मैं तुम्हें मरने न दूंगा, सत्य को हरने न दूंगा।
कलम मेरे पास है इतिहास मेरे पास है।
मैं कवि आवाज देता हूँ, तुम्हें विश्वास से!

चेतावनी

गौरीशङ्कर 'सत्य'

कवि-परिचय

नाम : गौरीशंकर "अरुण"

जन्म तिथि : ९ जुलाई १९३८

स्थायी पता : जीतमल जी की पोल, आचार्यों का चौक, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : कविताएं व गीत (दैनिक; साप्ताहिक व मासिक पत्र-पत्रिकाओं में)

प्रेरणा के स्रोत : जीवन के वे वर्ष जिन्हें मैं देख चुका हूं, वर्तमान वह व्यवस्था जिसमें मैं जी रहा हूं इसके अतिरिक्त साहित्य की प्राचीन विधाओं के प्रति आस्था। अभिव्यक्ति में व्यंग्य और प्रतीक के प्रति मोह। कविता के नये फर्मों में अभी अपनी कविता को नहीं गढ़ पाया जिसे "नई कविता" कहा जा रहा है।

(१) मत मुझे समझना कवि, कहीं मेरे साथी!
मैं कागज पर बस शब्द बिछाया करता हूं
उन शब्दों की रेखाओं से कुछ चित्र बना
अपने आहत उर को बहलाया करता हूं

(२) शेर कहता हूं मैं सुनता हूं, मजा लेता हूं
इस तरह, उम्र को आसान बना लेता हूं
काबिले दाद मेरे शेर नहीं तो न सही
मैं सुखन वर न सही, बात तो कह लेता हूं

दु:साहस के अरे अंधेरे तनिक ठहर तू,
विश्वासों का सूर्य उदय होने वाला है!

भस्मासुर के सुनो वंशजों कान खोल कर,
अब मेरे शिव को छलना आसान नहीं है!
सीमा की सीता को छलने छद्मवेशियों—
मत आना अब पहले वाला राम नहीं है!

बर्फ हिमालय की अब ठंडी नहीं गर्म है
देख अभी उसके कण-कण में आग भरी है
सागर की लहरें अब शान्त नहीं रहने को
प्रतिकारों के अन्तस्तल में ज्वाल उठी है

अमर ज्योति यह बुझने वाली नहीं पतिंगे!
तेरे पङ्खों का विनाश होने वाला है!
दु:साहस के अरे अंधेरे……

तुम मेरे बस शान्त रूप से ही परिचित हो,
अब मुझको प्रलयङ्कर रूप दिखाना होगा!
अमृत की मनुहारें मेरी तुम्हें न भायीं,
अब मुझको विष बरबस तुम्हें पिलाना होगा!

● पैढीच

जहां कन्हैया की मीठी वंशी बजती थी
रणभेरी के संग वहां अब बिगुल बजेगा
तन-मन-धन सर्वस्व समर्पित कर स्वदेश को
भारत के घर-घर मे सनिक वीर सजेगा

अभिशापित-अभिमान दम्भ के दर्प ठहर तूं !
देवासुर-संग्राम यहां होने वाला है !
दु:साहस के अरे अंधेरे······

अगर नहीं विश्वास, खोल इतिहास, देखले,
हर पत्थर हमसे टकराकर गल जाता है !
जो भी कांटा चुभा हमारे खाक हो गया,
आकर हर तूफान यहा पर ढल जाता है !

पापों का परिणाम भुगतने तनिक ठहर तूं
महादेव के वक्र नयन से आज प्रलय होने वाला है
दु:साहस के अरे अंधेरे तनिक ठहर तूं
विश्वासों का सूर्य उदय होने वाला है !

गुलशने कशमीर

तुफ़ैल अहमद 'ताबिश'

कवि-परिचय

नाम : तुफ़ैल अहमद समदानी "ताबिश"

जन्म तिथि : २२-८-१९३७

स्थायी पता : आज़ाद मंजिल, मोहल्ला सब्ज़ान, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : अभी तक मजमूआ-ए-कलाम शाया नहीं हुआ लेकिन रिसालों में कलाम छपता रहा है। अखिल भारतीय मुशायरों में भी शरीक होता रहा हूँ।

प्रेरणा के स्रोत : मैं बजा तौर पर यह कह सकता हूँ कि मेरे घर की ज़बान उर्दू है। शायरी मुझे विरसे में मिली है। वैसे मुझे शायर होने पर नाज़ नहीं है। बकौल ग़ालिब:—

"कुछ शायरी ज़रिया-ए-इज्ज़त नहीं मुझे"

इस पे नाज़ करने वालों की भी कमी नहीं है जिसके ज़रिये वो नामवरी पैदा करने में कोशां है। मुझ पर बाग़ स्कूल की महबूब, गुलो-बुलबुल की शायरी असर-अन्दाज़ नहीं हो सकी। अलबत्ता असग़र, हसरत मोहानी और जिगर की शायरी ने मेरी रहनुमाई की है।

छेड़ पाकिस्तान फिर सूझी तुझे कश्मीर से,
किस क़दर बर खुद ग़लत-बे अक्ल है तक़दीर से,
ख़ाबे जर्रा देखता है बे खबर ताबीर से,
सामना शमशीर से है आहनी ज़न्जीर से,
क्या हक़ीक़त है तेरी कितनी-श्री ताक़त है तेरी ?
ज़ोमे बातिल हो गया तुझको हिमाक़त है तेरी !

घुस गया कश्मीर में फिर तू बगावत के लिये,
रास्ता तूने निकाला फिर शरारत के लिये,
खान भारत का बिछा है तेरी दावत के लिये,
हर जवां तैयार है तेरी ज़ियाफ़त के लिये,
गोलियां हाज़िर हैं जितनी सेर होकर खा यहां !
मरगे वे हनगाम है मज़ूर तो मरजा यहां !!

तेरी नज़रें हैं शुरू से गुलशने-कश्मीर पर,
इबतदा ही से उतर आया था तू तकसीर पर,
हाथ भारत का ना उठा था तेरी ताज़ीर पर,
तूने खुद ज़रबें लगा लीं अपनी ही तकदीर पर,
तूने खुद बेमौत मरने का इरादा कर लिया !
अपनी शोरीदा सरी का खुद मुदावा कर लिया !!

हर तरह कश्मीर वाले देस में आजाद हैं,
हर तरफ शादाबियां हैं सैर'से आबाद हैं,
हिन्द के साये में खुश हैं सब बहुत दिलशाद हैं,
ये ग़लत इलज़ाम है वो *माइले-फ़रयाद हैं,*
फ़ितना पाकिस्तान ने उठा है इनके नाम से !
किस क़दर कोरा है अक़्लो फ़िक्र से अंजाम से !!

● जगतारसिंह

एक है भारत में सब हिन्दू मुसलमां एक हैं,
जानो दिल से है हमारा अहदो पेमां एक हैं,
सब यहां कश्मीर के हिन्दो-निगेहबां एक हैं,
एक है आवाज सबकी सब के अरमां एक हैं,
सीढ़ की हड्डी कुचल दें फिर कभी हिम्मत ना हो !
बानिये कश्मीर देखे फिर उसे जुर्रत ना हो !!

ख्वाबे जरीं=सुनेहरा सपना
ताबीर=सपने का नतीजा
वहमे बातिल=झूठा गुमान
ख्वान=खाने का थाल
मरगे बेहनगाम=बे वक्त की मौत
ज़ियाफत=मेहमानदारी
तकसीर=जुर्म
ताज़ीर=सज़ा
खुर्दें=छोटे
शोरीदा सरी=पागलपन
नाहले-फरयाद=फरयाद करना

उद्‌घोष

योगेन्द्र 'किसलय'

कवि-परिचय

नाम : प्रो. वीरेन्द्र 'किसलय'

जन्म तिथि : १० जनवरी १९३९

स्थायी पता : 'शांति-निकेतन' सूरसागर, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : प्रकाशन के नाम पर कहानियां व कविताएं विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। 'युवक' कहानी प्रतियोगिता में 'भरी-भरी आंखें; एक पर्मस की मौत' प्रथम पुरस्कृत।

लिखने का उपक्रम प्रकाशन से अधिक रहा है।

प्रेरणा के स्रोत : वे सभी क्षण जो मानस को कुरेद जाते हैं और अथाह संवारी तथा बिखरी हुई जिन्दगियां। विशेष कर वे मित्र सभी मिलने-जुलने वाले जो अनजाने में आप बीती कह जाते हैं।

शान्ति का शील लूटने वाले --
ये बटमार !
पाक कहाने वाले---
ये नापाक !
आखिर सह न सके हमारा शौर्य-बल ।

गौतम,
अकबर,
और गांधी की
इस विशाल,
कुन्दन सरीखी,
धरती पर आततायियों का पदार्पण हो ही कैसे सकता था ?
भूल जाते हैं ये आक्रांता, कि
हमारा कान्हा
जमना के तट पर

प्रेम की विरल बासुरी ही नही बजाता था—
अपितु सुदर्शन चक्र का भी प्रयोग जनता था।

समझाने,
सुझाने
को हद से निकलने वाले हमारे ऐ दुश्मन !
हमने तुम्हें कितना चाहा है,
स्वीकारा है,
और तुम्हारे दुराग्रहो,
कुटिल चक्रों से
हमे कितना दु ख-दर्द सहना पड़ा है ?
हमने सदा यही सोचा कि—
तुम बदलोगे,
तुम्हार आवाम मे
नेकदिली मोहब्बत
और दोस्ती का कभी तो आलम आएगा—
लेकिन तुमने हमारी सभी उम्मीदो को कुचल डाला।

सारे जगत के सामने
सिद्ध कर दिया यह
कि शांति,
मित्रता,
सोहार्द,
प्रेम
तुम्हारे लिए सहज विस्मृति के शब्द मात्र हैं।

तुम इसके योग्य ही नहीं
ओ मन्द बुद्धि, विनिन्दक दुश्मन !
तुम एक पवित्र धर्म की आड़ में
अपनी अन्तरात्मा को धोखा दे रहे हो,
और तबाही का तूफान,
मुशकिलें,
बरपाना चाहते हो हमारी मिट्टी के
छह करोड़ कुरान के बन्दों पर।

ओ मध्ययुगी बर्बर !
चंगेजी समय को गुज़रे शताब्दियां बीतीं
युग बदले हैं
लोग बदले हैं
किन्तु दु:ख है हमें, कि—
तुम अभी तक नहीं बदले।

इतिहास के पन्ने पलट कर देखो
हमने औरों की ज़मीन के लिए
युद्ध नहीं लड़े,
जानें नहीं लीं,
सिन्दूर नहीं पुंछवाए,
बच्चों को बिलखने के लिए बाध्य नहीं किया।

इसलिए नहीं कि,
हमारी धमनियों में रक्त की कमी थी,

हमारे बाजुओं को लकवा मार गया था,
बल्कि इसलिए,
कि हमारे दिलो-दिमाग में—
घृणा नाम की चीज नहीं घुसती थी;
हमारी आंखें पराए दामन पर नहीं फिसलती थी;
बल्कि इसलिए,
कि हम जिन्दगियो से मुस्कराहट अलग नही
करना चाहते थे।

इसलिए कि
हम महाभारत लड चुके थे
और इसलिए
कि हमने प्रियदर्शी अशोक का हृदय परिवर्तन देखा था।

धर्म को बदनाम न करो
उस पर अपनी घृणा की कीचड़ न उछालो,
जिहाद के नारे न लगाओ।

तुम अकेले धर्म के ठेकेदार नही !
सच तो ये है—
कि तुमने धर्म को मार डाला है।

ओ धर्मच्युत
नैतिकता-विहीन

निर्दयी शत्रु
तुम्हारी विजय तो स्वप्न तक में मुश्किल है।

क्यों कि सत्य के आगे
झूठ का सैनिक सदा पराजित हुआ है।

उधार मांग कर जिया जा सकता है,
लड़ कर जीता नहीं।

तुमने देखा,
कि हमारे यहा
पैटन टैंकों के आगे अपना सीना लगा देने वाले
अब्दुल हमीद हैं,
अय्यूब हैं,
और राडार की छाती मे घुस जाने वाले
जान के निर्मोही चालक भी।

इतना ही नही
हमारे यहां
जीत कर भी
बिना किसी शर्त सुलह करने वाले
उदार नेता भी।

देखो ! तुम जरा अपने रहनुमाओं की ओर देखो—
जो तुम्हें पतन की ओर खींचे लिए जा रहे हैं ।

उनसे कहो,
कि वे सामने से हट जाय,
छुपा लें अपने अपराधी चेहरों को ।

उन्होंने प्रजातन्त्र की तुम्हारे यहां हत्या की,
मज़हब को कट्टरता को राजनीति समझा,
प्रेस को सलाखों के भीतर ठूंसा
और लोगों को सदा गुमराह रखा ।

ये अय्यूब,
ये भुट्टो
मानवता के पुत्र नहीं ।

ओ ख़बीस दुश्मन !
(काश ! तुम ये जानो कि तुम्हें दुश्मन कहते कितना
कष्ट होता है हमें)
तुम अपनी स्वतन्त्रता को बेचने पर उतारू हो,
तुम्हारा मस्तिष्क फिर गया है,
तुम स्वयं को एक ज्वालामुखी में धकेले जा रहे हो ।

तुम भले ही चीन को बुलाओ

और वेच दो उसके हाथों अपना धर्म,
अपनी स्वतंत्रता।

लेकिन भारत के लोग
किसी दूसरी धातु के बने हैं।

यहां सभी के धर्म सुरक्षित हैं;
यहां जनतंत्र की पीठ में छुरा नहीं भोंका गया है
यहां स्वतंत्रता को बेचने की बात नहीं सोची जाती;
यहां अमन की देवी को नङ्गा नहीं किया जाता।

हम अपने लहू के—
आखिरी कतरे तक देश की मर्यादा रखेंगे।

हम जमीन के लिए नहीं
आदर्शों के लिए लड़ेंगे,
और जीतेंगे।

ऐसे मुल्क की जीत कभी रोकी गयी है ?
हमें कश्मीर की रअनाई,
उसके हर एक गुञ्चा,
कली,

और शादाब फ़िज़ाओं की कसम है—
हम सच्चाई का परचम थापे
युद्ध-क्षेत्र में बढ़ेंगे,
और जीतेंगे।

कश्मीर के वीरो के प्रति

मदन केवलिया

कवि-परिचय

नाम : मदन केवलिया

जन्म तिथि : १५ जनवरी १९३५

स्थाई पता : पार्वती सदन, कोटगेट, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख, कविता व कहानियां। स्वतंत्र रूप से कोई संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ। १४ वर्ष की आयु में पहली कहानी 'गुल्लू' उर्दू 'नौनिहाल' (भारत सरकार द्वारा प्रकाशित) में प्रकाशित हुई। राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम) को काव्य-संग्रह 'शहनाइयों का देश' प्रकाशनार्थ प्रेषित।

प्रेरणा के स्रोत : अपनी जन्मभूमि (डेराइस्मालखां) से सदा के लिए बिछोह एवं जीवन की घनीभूत पीड़ा, जो परिचित-अपरिचित सब से मिली।

मेरे वीर सैनिकों !
आज फिर
बर्फीली पहाड़ियों के इस पार
देवताओं की सुरम्य घाटी में
कुछ दानव घुस आये हैं,
दुग्ध-धवल सरिताएं
जो कभी, सुरबालाओं के कलनाद से
स्पर्धा करती थीं;
जिनकी लहरों की तरह
वहां यौवन अङ्गड़ाई लेता था,
वह मुक्तहास अब,
मन्द हो गया है
धवल उर्मियां रक्तिम जान पड़ती हैं,
ऐसा न होने पावे।

इतिहास बोलता है
कि इस अमरों के देश में
असुर बढ़ नहीं पाये हैं
हम विषपायी हैं
पर विष देना भी जानते हैं।

देखो जाने नहीं पावे
इस बार,
सौ बार क्षमा कर देने पर भी
गौरी दयावान नहीं हो सकता

किसी के दीवारों में चुनें जाने पर भी
औरङ्गजेब बदल नहीं सकता
शत्रु के प्रति दया और करुणा
युद्धनीति कतई नहीं है यह,
खोल दो शिवजी की तरह
अपने तीसरे नेत्र;
कर दो भस्म सारे मनसिजों को
न रहेगा बांस
न बजेगी बांसुरी
धरती का स्वर्ग
अमरों का रहेगा
असुरों का नहीं।

बढ़ते चलो जवान !

शिवराज छङ्गाणी

कवि-परिचय

नाम : शिवराज छङ्गाणी

जन्म तिथि : २१ नवम्बर १९३८

स्थायी पता : ग्वालदासजी छङ्गाणी एडवोकेट, नत्थूसर गेट, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : राजस्थानी व हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

प्रेरणा के स्रोत : मानवता के विरुद्ध गलत कदम उठाने वालों के प्रति चुनौती।

वतन के खातिर मरने वालों ! तुम पर है अभिमान
बढ़ते चलो जवान ! बढ़ते चलो जवान !!

आज शत्रुओं ने सीमा पर फिर आतङ्क मचाया
आज उन्होने नई जङ्ग का यह पैगाम सुनाया
बर्बरता और जङ्गलीपन को सङ्ग वही ले आया
पर अपने वीरों ने उनको सच्चा सबक सिखाया।
वतन के · ···

आज राष्ट्र पर विपदा के काले बादल मण्डराते,
हम आफत में पलने वाले कब डरते घबराते।
मौत कांपती हमें देखकर जब भी हम जुट जाते,
जो हमसे टकराते हैं वे मिट्टी में मिल जाते।
यहां खून के हर कतरे में उठता है तूफान।
वतन के·····

देख बरसते अङ्गारों को 'मां' ने हमें पुकारा
हम पौरुष के धनी किसी ने पौरुष को ललकारा
त्याग और बलिदान रहा है जिनका हरदम नारा
हमें चुनौती देने वालों हमने फिर हुँकारा
चलें गोलियां चाहें दन-दन युद्ध मचे घमसान।
वतन के······

यह प्रताप की जन्मभूमि और यहां शिवा की शान
जयमल, गोरा, पत्ता भी तो हुए यहां बलिदान
झांसीरानी, दुर्गाबाई पर है हमें गुमान
यहा हजारों मा-वहिनो ने दिया सिन्दूरी दान
बोलो बम बम महादेव की जय-जय हिन्दुस्तान।
वतन के······

सरहद जाग उठी !

शेखर सक्सेना

कवि-परिचय

नाम : शेखर सकसेना

जन्म तिथि : १५ मार्च १९३३

स्थायी पता : संपादक, सेनानी साप्ताहिक, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : स्फुट तथा बाल-साहित्य

प्रेरणा के स्रोत : जिन्होंने मेरा मर्म-स्पर्श किया है।

सूरजमुखी-सा जब खिल उठा है
और महक उठा है पूरे गुलाब-सा
तो ये शोहदे घिर आए हैं
उसको बे-आबरू करने।

उठो जवानो, बढो—
निर्भय बढो
शाबाश !
शाबाश जवानो !!
सरहद की अस्मत पर
बदनज़र डालने वाले के
पैटन जबड़े को खूब तोड़ा
सेबर जेट भुजाओ
और नेपाम पखों को मेरे वीरों
खूब धज्जिया बिखेरी
देखो दूर खड़े असुर
भी थरा-थरा रहे हैं।

अमरता का लाइसेन्स रडार गले में बांधे
भैंसासुर कैसा लोट-पोट हो रहा है
'चकलाला' और 'सरगोधा' में !
शाबाश जवानो
तुमने अल्हड़ सरहद की
अस्मत को बचा लिया है
रखड़ी की आन को बचा लिया है
रोली और तिलक को खरा उतार दिया है
कसमें पूरी कर दिखाई हैं
सूतो धागे की पवित्रता कायम रख ली है
धन्य हो तुम, धन्य !

फिर कांप उठा है····!

राजानन्द

कवि-परिचय

नाम : राजानंद भटनागर

जन्म तिथि : १५ अगस्त १९४१

स्थाई पता : छबीली घाटी, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : उपन्यास : प्यासे प्राण, नीली झील लाल परछाइयाँ

प्रेरणा के स्रोत : अध्ययन, जन-जीवन, वैयक्तिक पीड़ा।

फिर कांप उठा है
कलेजा चट्टानों का
और दरख्तों की पत्तियों पर
खून के कतरे उछले हैं,
फिर कश्मीरी पशमीने के
कटे हैं धागे-धागे
और सेबों के गद्दर बागों पर
पड़ी है बदनज़र लुटेरों की;

फिर डलझील के इन्द्रधनुष को
चुराने की कोशिश की है
हवाबाजों ने
फिर एक खूबसूरत गुलदस्ते को
नोचने के लिए—
हाथ बढ़े हैं कस्साबों के;

फिर इस्लाम के नाम पर
तोड़ी गई हैं मस्जिदें—
उजाड़े गए हैं गांव
फिर कश्मीरी कलाइयों की
चूड़ियां उतारी गई हैं
और खींची गई हैं कानों की—
बालियां;

फिर अमन के कबूतरों पर—
झपटे हैं गिद्ध
और सरहदों पर जमे हैं
नर-भक्षी भेड़िये;

फिर हमें बताना है
हममें ताकत है टैंकों को—
तोड़ने की
और तोपों के दहानों को मोड़ने की,
हमें लिखना आता है देश का इतिहास
अपने खून से,
अपनी आहुति से।

तीन देशभक्तिपूर्ण मुक्तक

चन्चल हर्ष

कवि-परिचय

नाम : चन्चल हर्ष

जन्म तिथि : २६ अक्टूबर १९३७

स्थाई पता : हर्षों का चौक, बीकानेर अथवा आकाशवाणी, बीकानेर,

प्रकाशित साहित्य : स्थानीय व बाहरी पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं का प्रकाशन ।

स्थानीय सेनानी, वर्तमान, मरुदीप, शिकायत, व बाहरी योजना (दिल्ली), राष्ट्रदूत (जयपुर), लोकमान्य (कलकत्ता), गल्प भारती (कलकत्ता), सन्मार्ग (कलकत्ता), सुषमा (दिल्ली), उर्वशी (बम्बई) आदि ।

प्रेरणा के स्रोत : आदरणीया माँ ।

(१)

बेसबब्र जिसने गवांदी जानें कई,
उस पर भरोसा कोई कर सकता नहीं।
हम हिमालय की संतानें गङ्गा के भरोसे,
ये कदम उठता है फिर झुकता नहीं॥

(२)

दुश्मनो ! पनाह न पा सकोगे सोचलो !
साथियो बढ़ो ! इनको दबोच लो
भाखड़ा-चम्बल-झेलम की कसम है
इस तरफ उठती नज़र को नोच लो।

कवि-परिचय

नाम : राजानंद भटनागर

जन्म तिथि : १५ अगस्त १९३१

स्थाई पता : छबीली घाटी, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : उपन्यास : प्यासे प्राण, नीली झील लाल परछाइयां

प्रेरणा के स्रोत : अध्ययन, जन-जीवन, वैयक्तिक पीड़ा ।

फिर कांप उठा है
कलेजा चट्टानों का
और दरख्तों की पत्तियों पर
खून के कतरे उछले हैं,
फिर कश्मीरी पशमीने के
कटे हैं ताने-बाने
और सेवों के गद्दर बागों पर
पड़ी है बदनज़र लुटेरों की,

फिर डलझील के इन्द्रधनुष को
चुराने की कोशिश की है
हवाबाज़ों ने
फिर एक खूबसूरत गुलदस्ते को
नोचने के लिए—
हाथ बढ़े हैं कस्सावों के;

फिर इस्लाम के नाम पर
तोड़ी गई हैं मस्जिदें—
उजाड़े गए हैं गांव
फिर कश्मीरी कलाइयों की
चूड़ियां उतारी गई हैं
और खींची गई हैं कानों की—
बालियां;

कवि-परिचय

नाम : चन्चल हर्ष

जन्म तिथि : २६ अक्तूबर १९३७

स्थाई पता : हर्षों का चौक, बीकानेर अथवा आकाशवाणी, बीकानेर,

प्रकाशित साहित्य : स्थानीय व बाहरी पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं का प्रकाशन ।

स्थानीय सेनानी, वर्तमान, मरुदीप, शिकायत, व बाहरी योजना (दिल्ली), राष्ट्रदूत (जयपुर), लोकमान्य (कलकत्ता), गल्प भारती (कलकत्ता), सन्मार्ग (कलकत्ता), सुषमा (दिल्ली), उर्वशी (बम्बई) आदि ।

प्रेरणा के स्रोत : आदरणीया माँ ।

(१)

बेसब्र जिसने गवांदी जानें कई,
उस पर भरोसा कोई कर सकता नहीं।
हम हिमालय की संतानें गङ्गा के भरोसे,
ये कदम उठता है फिर झुकता नहीं॥

(२)

दुश्मनो ! पनाह न पा सकोगे सोचलो !
साथियो बढ़ो ! इनको दबोच लो
भाखड़ा-चंबल-झेलम की कसम है
इस तरफ उठती नज़र को नोच लो।

— उल्फत

ये सभी हमने बनाये श्रम सींचकर
आज खतरा लग न पाये इस चीज़ पर
उम्मीद की दुल्हन खड़ी विश्वास ले
कोटि-कोटि हाथ हैं सङ्गीन पर!

ओ रूंगो रूंतोड़ो

धनञ्जय वर्मा

कवि-परिचय

नाम : श्री धनञ्जय वर्मा

जन्म तिथि : १३ अगस्त १९३२

स्थायी पता : हनुमान हत्था, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : आकाशवाणी जयपुर केन्द्र से सम्बद्ध एवं वहां से रचनाओं का प्रसारण व पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशन।

प्रेरणा के स्रोत : स्वतः प्रेरित व अग्रज बन्धु श्री मेघराज जी मुकुल की साहित्य साधना ने मुझे काव्य में प्रवृत्त किया।

फोड़ो ! सदा फोड़ा घालै
पण—
दीखणं में छोटो
पीड़ रो मोटो
एक रूंतोड़ो
रास्यू जुळ बुळावं, चबका मारै
सो डोल अधर कर राख्यो है ।

जी में आयो
स्यात् पपोळ्यां, की चैन पड़सी
माड़ी मोटी पीड़ थमसी
पण म्हनें के ठा ही
कै—"नख रे छू जाणं स्यूं
बळ्यो ओ विसतार खासी
दुख देऊ बण्यो रे'सी
कदी दिन सत्यानासी"
मैं तो आ सोची ही
कै—"नख रो तो आंगळी स्यूं
गहरो गाढ़ो नातो है"
पण बळी आ समझ
जाणं कीया आडी आगी
ओज्जत ढांपण हाळी कारो
आंख्यां देखी भूंडी लागी

जो नें कीयां ध्यावस पड़ै
डील जद पड़ग्यो सिड़ै
अब हाल ओ है
कै—"रात काटी नी कटै
दिन पहाड़ ज्यूं भारी होग्यो
जो टिकै क्या रे प्राण
बीज फळ स्यूं भारी होग्यो"
जाणू हूं मैं ओ री छमता
'बाटियै' रो रसियो है
दाग्यां पिण्ड छूट जासी
बी तो जी नैं तसियो है
भलै माणसा रो सीख
"पळेडो बीमारी
जोणो करदै भारो
थी सी कै दात्तारी
सिर आ चढ़ै भिखारी।"

मेरा देश

ग्रोम केथलिया

मेरा अभिनव देश जहां में सबसे प्यारा !
सागर की लहरें धोती हर रोज किनारे ।
पर्वत-मालाएं लाती हर प्रातः बहारें ।
कितनी सुखद धरा, जिसके हम वासी ।
जहां बह रही गङ्गा-जमुना की धारा ।
मेरा अभिनव देश…

बहुत पुराना है इतिहास यहां का
मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे बतलाते
सभी एक हैं, भारत के हम वासी
अनुपम सबका देश, सभी से न्यारा
मेरा अभिनव देश…

बुद्ध, प्रताप, शिवा की यह धरती है
दूर-दूर नदिया कल-कल करती है
मानवता का पाठ पढ़ाया जग को
स्वयं देवताओं ने जिसे संवारा
मेरा अभिनव देश…

नहीं किसी से वैर, हैं प्रीति निभाते
बापू का सन्देश सभी को सुनाते
मानवता को मत मिटने दो धरती से
जिसका रक्षक है जनतंत्र हमारा
मेरा अभिनव देश…

● सतहृतर

किसकी हिम्मत जो हमको ललकारे
नहीं झुकेंगे कभी यह शीश हमारे
कौन मिला सकता है धरा गगन से
गीता का संदेश है एक सहारा
मेरा अभिनव देश—

लक्ष्मण की रेखा है, भारत की सीमाएं
पहरा देती जल-थल-नभ सेनाएं
इसकी मिट्टी में ताकत है भूचालों की
वीर सुभाष ने इस पर तन-मन-वारा
मेरा अभिनव देश जहां में सबसे प्यारा !

किसकी हिम्मत जो हमको ललकारे
नहीं झुकेंगे कभी यह शीश हमारे
कौन मिला सकता है धरा गगन से
गीता का संदेश है एक सहारा
मेरा अभिनव देश—

लक्ष्मण की रेखा है, भारत की सीमाएं
पहरा देती जल-थल-नभ सेनाएं
इसकी मिट्टी में ताकत है भूचालों की
वीर सुभाष ने इस पर तन-मन-वारा
मेरा अभिनव देश जहां मे सबमे प्यारा !

जिन्दाबाद हिन्दुस्तान

बाबु बीकानेरी

कवि-परिचय

वायु बीकानेरी

११ जनवरी १९४४

बारैठों चौक, बीकानेर

'राजस्थान स्टेण्डर्ड' पत्र में व अन्य साप्ताहिक पत्रिकाओं में यदा-कदा गीतों व कविताओं आदि का प्रकाशन।

मानव-जीवन के आदर्श प्रवाह के साथ-साथ जीवन की वास्तविक उलझी हुई गुत्थियाँ मेरी प्रेरणा की स्रोत रही हैं। वैसे वक्त का तकाजा, वायु-मंडल की बदलती हवायें कलम को चला दिया करती हैं।

फिर गरज उठी हैं सीमाएं. रणचण्डी करती है आह्वान,
कश्मीर बहाने मरने को, आया है पाकिस्तान।

(१)

हम नही चाहते खून बहे दुनिया में इन्सानो का
लेकिन ये भी नही चाहते, जुल्म बढ़े शैतानों का
मजे हुए शैतान चीन का, साथी पाक नया शैतान—
कश्मीर बहाने मरने को···

(२)

सन्धाम से लेके आज तलक जहरीले घूंट पिये हमने,
ग्रमहाय पाक के काले करतब फिर भी सहन किए हमने,
यही समझ के छोटा है संभल जाएगा ये नादान।
कश्मीर बहाने···

(३)

लेकिन जब मौत निकट आती चीटी के पर आ जाते हैं
मरने वाले गीदड़ खुद ही शहरों में घुस आते हैं
बुर्का पहन घुसे ये गीदड़ खोया धर्म ईमान।
कश्मीर बहाने···

(४)

हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई पहले हिन्दुस्तानी
रखने को आजाद देश को देंगे सब कुर्बानी
एक इंच भूमि के बदले देंगे अपनी जान।
कश्मीर बहाने···

(५)

सर पे बांध के कफन चल पड़ी हैं टोलियां
दुश्मनों के खून से खेल रही हैं होलियां
नाच उठी है ये धरा झूम उठा है आसमान।
कश्मीर बहाने ··

(६)

गङ्गा, जमुना हिमगिरी में आज उष्णता आई
दसों दिशा आकाश बीच में लाल रक्तिमा छाई
कण्ठ करोड़ों बोले ये जिन्दाबाद हिन्दुस्तान!
जिन्दाबाद हिन्दुस्तान ··

सूली, चुनौती, कसौटी

रामरतन बडोला।

कवि-परिचय

नाम : रामरतन यशोला

जन्म तिथि : २५ दिसम्बर, १९२७

स्थायी पता : क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : यों तो देश के सभी हिन्दी की लब्ध प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में रचनायें छप चुकी हैं परन्तु प्रकाशित पुस्तकाकार दो कविता संग्रह हैं—

(१) स्वर्ण-विहान (२) कदम-कदम पर फूल (कथा शिल्प में अधिक सशक्त) लगभग बीस पाण्डुलिपियां प्रकाशन के लिये प्रतीक्षा कर रही हैं कई वर्षों से।

प्रेरणा के स्रोत : मां, वृहद् हिमालय व कठोर संघर्ष। सत्न्याय की उपलब्धि के लिए एक मानसिक अन्दोलन और व्यवहारिक जीवन में उसका अभाव पाकर एक उत्पीड़न, प्रतिशोध व चिन्तन का पदार्पण।

श्रम की कुण्डलिनी जगाकर
बुद्धि का दीपक जलाकर
काया सत् अनल में होमकर
जग-कल्याण पथ का प्रदर्शक
शान्ति, सुख, मनुजता की चरम उपलब्धि
के लिये पारस सदृश, वह महात्मा—
गांधी कहो, बुद्ध या महाभारत
अर्जुन, जफर, रानाडे, तिलक
—यह तो संज्ञा है।

पर गङ्गा का सगर-पुत्रों के लिए धरती पर उतरना
शङ्कर का कालकूट, तेगबहादुर गुरु का सिर कटा लेना
शाहे 'जफर' की मादरे-हिन्द की खाक में
मिटने की तमन्ना; एक गज जमीं के लिए आह भरना
अब्दुल हमीद का पैटन टंकों को चकनाचूर कर देना
सम्राट होकर भी, 'प्रियदर्शी' की 'धम्म-जय' की आस्था
व गांधी का नोआखाली में यों पैदल गुजरना
यही बस देश भारत है, इस भावना का नाम है हिन्दोस्ता
जो शांति का पूजक,
निर्माण का श्रमिक वसत्य का खोजी—
एक ऋषि-जिसकी तपस्या भङ्ग करने हेतु कुढ़कर
चुप गले में डाल आया एक विषैला सर्प एक पड़ौसी

निर्माण का यज्ञ ध्वंस करने, शान्ति का तपोवन नष्ट करने
'नीरो' की तरह फिर मजे से ताली बजाना,
वंशी सुनाना
मनुजता का 'रोम' चाहे जल रहा हो आग में।

पर ऋषि की भृकुटि तनेगी
भष्म होगा नीच पंछी
जिसने मुनि पर बींठ करदी।

पल्लवित न हो पायेगी विष-वृक्ष की काया
मोरटार, बन्दूक, गोली, टंक, बम बनकर
असत् सत् को नही निगल पायेगा।

हिंसा से असुर नही जीत पायेगा
तपस्वी तप कहा करेगा चैन से
जब वन दावानल से भड़क जायेगा।

तपस्वी का तपोमय तेज विष्फारित हुआ है
शङ्कराचार्य की निष्ठा की पताका को उड़ाकर
हिमालय की चोटियो से सिन्धु-नद तक।
वह बिजली गिरा देगा।
दुर्योधन का भद्र कुरुक्षेत्र
को न्याय-भूमि में दलित होगा।

भारत कृष्ण है
गीता का सन्देश उसकी विजय है, युद्ध है सत्, असत् का।

विजय होगी हमारी क्योंकि सुधर्म की नींव पर
सत्य की रक्षा हेतु अपने राष्ट्र के हित हम लड़ रहे हैं
हमने न्याय के ध्वज से अपने,
तोप-गोलों व जहाजों को सजाया है।

मतभेद की खाई पाटकर एक होकर
स्वाधीनता, सृजन व एकता का दीपक जलाया है।

युद्ध होगा जय हमारी है
अब कोई चारा नहीं है
रौंदा गया बूटों तले बर्बर
शान्ति-पथ का बुद्ध तिब्बत
अल्लाह को सज्दा किये थे जब
भून डाला गोलियों से उन्हें तब।

जम्मू की मस्जिद मे अल्लाह के प्यारे
अम्बाला के गिरजाघर की ध्वस्त काया
दिव्य ईसा के लिये एक नई सूली
व पैगम्बर मोहम्मद को एक चुनौती
कृष्ण की गीता के लिए एक कसौटी।

● सत्यार्थी

गाण्डीव का हर तीर छेद डालेगा
आततायी को, अक्रांता घमण्डी को।

हर कदम पर, हर सितम पर हम बढ़ते चलेंगे
हम रुक नहीं सकते, झुक नही सकते लड़ते चलेंगे
रुख हवा चाहे जिधर ले कारवां रुक नही सकता
आंधियां चाहे डरा लें पर आशियां मिट नहीं सकता
तोप गोलों के बीच मे भी हिन्द का जवां डिग नही सकता।

क्योंकि यह मिट्टी का घरौंदा नहीं देश; जो सजाया हमने
यह हमारी मां का मन्दिर है बनाया हमने।

मोर्चे पर सभी हम तैयार जवान है,
मा के चरणों मे हम सभी कुर्बान हैं।

अपराजित भारतीय आत्मा

डॉ. प्रभाकर शास्त्री 'दिनेश'

कवि-परिचय

नाम : डॉ. प्रभाकर शास्त्री

जन्म तिथि : १३ अप्रल १९३९ ई.

स्थायी पता : खूटेटा-मार्ग, किशनपोल बाजार, जयपुर (राज.)

प्रकाशित साहित्य : कतिपय शोध निबन्ध, 'याज्ञवल्क्य स्मृति' का हिन्दी अनुवाद, अन्य लोकोपयोगी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक लेख आदि।

प्रेरणा के स्रोत : प्राकृतिक सौन्दर्य एवं वस्तु जगत् की विभिन्न अनुभूतियां।

भारत के पश्चिमी सीमान्त पर
भूखे
लोलुप गिद्ध मण्डरा रहे है ।

उन्हे यह मालूम नही
कि यहा खाने को मिलेगा
नही मांस,
भागने को मिलेगा
नही सांस ।

यहां कतारें नही कायरों की
सेना यहा पर है
वीरों की
बहादुरों की
यहां की जनता में है आत्मबल
विश्वासों का सबल
धीरज का प्रतिफल
इसकी आत्मा को
कष्टों के अंधकार मे
भटकने नही देता है
सहमने नही देता है;

शताब्दियों से यह भारतीय ग्रात्मा जीवित रही है
अपराजित रही है,
प्रकाश में
अन्धकार में
संघर्षों में;

जो ग्रायेगा इसकी चपेट में
लपेट मे
वह खो बैठेगा
ग्रपनी आशाएं
अपने विश्वास
अपना अस्तित्व ।

हम उस वक्त तक जागते रहेंगे....!

धर्मेश शर्मा

कवि-परिचय

नाम : धर्मेश शर्मा

जन्म तिथि : २३ अक्तूबर १९३५

स्थायी पता : एस. के. रंगा 'धर्मेश', ईदगाह बारी, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : वक्र रेखाएं (कहानी संग्रह)

प्रेरणा के स्रोत : लेखन प्रकृति के पीछे एक अतृप्ति की भावना छिपी रहती है। मैं समझता हूं कि लेखक, कवि इस माध्यम से इस कमी की पूर्ति करने के लिए संघर्ष में जूझता रहता है। वह अपने इर्द-गिर्द मण्डराते हुए अभावों को प्रकट करने के लिए इस क्षेत्र को उपयुक्त मान कर ही चलता है!

प्रेरणा के स्रोत मेरे लिए एक मौन बुत-सा है, जो वेदनाओं व कुण्ठाओं से लिपटा हुआ-सा प्रतीत होता है। हां, इस स्रोत में राष्ट्रीय भावना का स्थान पहला है और वह होना भी आवश्यक है।

हम प्रजातंत्र की उज्ज्वल ज्योति लिए बढ़ते हैं,
वह ज्योति अब जगमगा रही है
जन-जन के घरों में, इस भीमकाय रात्रि में अंधेरा है
मगर हर एक के दिलो-दिमाग में भरपूर उजाला है ।

मैं प्रश्न करता हूँ —ऐसा क्यों ?
उत्तर मिलता है—
यह एक शर्मनाक हमला है,
जो छल व कपट का बेहद भूसा उड़ा रहा है ।

तो भी हम उस वक्त तक जागते रहेंगे
जब तक उसका मदमाता अधापन दूर न हो जाए
हम उस वक्त तक चौकन्ने रहेंगे, कदम मिलाते चलते रहेंगे
और उसे एहसास करा देंगे कि कश्मीर हमारा है ।

वह अब सैन्य-शक्ति की दूसरों से भीख मांग रहा है
वह अब भी सत्य को झूठ में बदलने के नारे लगा रहा है
वह जंग और मुहब्बत में खाइयां खोद रहा है ।

और हम उसे पार करते जा रहे हैं
चूंकि हमारे पास तटस्थता व मानवता की ज्योति है

कवि-परिचय

नाम : भरत व्यास (लोकप्रिय हिन्दी कवि एवं सिने-गीतकार)

जन्म तिथि : १७ सितम्बर १९१८

प्रकाशित साहित्य :

रङ्गीला मारवाड़
ढोला मरवण
ऊंट सुजान
मरुधरा
राष्ट्र कथा
रिमझिम
तीन्यूं एक ढाल
आत्म-पुकार
धूप-चांदनी
तेरे सुर मेरे गीत
अङ्गारों के गीत (प्रकाशनोन्मुख)

प्रेरणा के स्रोत : जीवन-संघर्ष

हमारे जवान ये हमारे जवान !
दिलों में जिनके आग है, हथलियों में जान—हमारे जवान !!

ये चाहें गर तो धूल में भी फूल खिलादें
ये चाहे तो वतन को अपना रक्त पिलादें
ये चाहे गर तो जुल्म जहान हिलादें
ये चाहे तो जमी को आसमां से मिलादें

शक्ति 'शिवा महान' की 'प्रताप' की है शान
हमारे जवान ये हमारे जवान !

झंडा है इनके हाथ मे भारत की शान का
इतिहास दे रहा प्रमाण इनकी आन का
'एटम' कही भड़क उठा जो इनके प्रान का
जवान ये मुकाबला करें जहान का

'बापू' की है ये आत्मा और 'नेहरू' की जुबान
हमारे जवान ये हमारे जवान !

अपने वतन के लोगों से ये साफ कह रहे
हम तो वतन के वास्ते कुर्बानी दे रहे
हम तो वतन के वास्ते कट-कट के सो रहे
आखों में भर के पानी हाथ तुम क्यूं रो रहे

इस कार्य के लिए हमें भीख की जरूरत नहीं,
इस कार्य के लिए हम किसी के आश्रित भी नहीं
चूंकि एशिया की उजागर ज्योति हमारे हाथ है
वह सैंतालीस करोड़ भारतवासियों से कभी नहीं छिनेगी।

आखिर नतमस्तक वे होंगे, जो शान्ति का गला दबोचते हैं
जो घूम-घूमकर इधर-उधर जवानी जमा खर्च कर रहे हैं
ये बातें बाद में नितान्त अप्रिय लगेंगी
ऐसी बातों को फिर कोई सुनेगा ही नहीं
क्योंकि प्रजातंत्र के इतिहास
के नए पृष्ठ शहीदों के खून से लिखे होंगे।

अब्दुल हमीद की कब्र

विप्लव सिन्हा

कवि-परिचय

नाम : प्रो. विशाल सिन्हा

जन्म तिथि : २४ दिसम्बर १९२०

स्थायी पता : २, डागा बिल्डिंग, के० ई० एम० रोड, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : कुछ कहानियां और कविताएं, अर्थशास्त्र सम्बन्धी कुछ लेख और एक पुस्तक के सहलेखक।
एक कहानी संग्रह 'एक और अनेक' (प्रेस में)।

गूञ्ज उठा है
रौद्र स्वरों में गूञ्ज उठा है
तुमुल घोष
प्रलयङ्कर समर का
और
रणभेरी के भयङ्कर निनाद में
एक स्वर—अदम्य
इतिहास के निर्माण का।

बन गए हैं नए तीर्थस्थान
नये मुकामे जियारत
यह अब्दुल हमीद, परमवीर
की कब्र है।

शत्रु के नापाक इरादों को
कुचल-कुचल, रौंद-रौंद
अपना बिछौना उसने
पहले आप बनाया है
और अब, वह चैन से सो रहा है
जन-हिताय उत्सर्ग कर
अपने अमर प्राण।

उसकी टैंक-भेदी बन्दूक की प्रलय गर्जना
बन गई है, चिरस्थाई प्रतीक
मातृभूमि की अटूट चिर-एकता की
मानव शौर्य की, बलिदान की
आस्था की, त्याग की
भारतीय हिन्दु-मुस्लिम एक्य और संस्कृति की,
अजस्र अविरोध्य जीवन्त

युगपरिवर्तनकारी गति की ।
त्रास, विषाद और व्याकुलता के क्षणों में
—दिल हमीद-सा मुझे कहां नसीब
फिर भी
कानों में गूञ्ज उठती है समवेत
दो स्वर-लहरियां,
रणबांकुरों की ललकार की
" हर-हर महादेव—अल्लाहो अकबर !"
आह्लादकारी, भयविनाशी
राष्ट्र की सिंह गर्जना ।
साक्षी होगा इतिहास,
विस्मित शत्रु और
विश्व सम्पूर्ण
देख रहा है,
विस्फारित आंखों से
नष्ट हो गया है
जाति-धर्म-सम्प्रदाय-भेद
भाषा,
पण्डित और मुल्ला का विरोध
भारत राष्ट्र बना है
और हमीद और हम उसके भाई
नींव के पत्थर हैं
डोलेंगे नहीं
मज़बूती देंगे ।

सिंहन के मुंह को
शिकार कूं लुभायो काहे ?

पी. पी. सिंह

कवि-परिचय

नाम : पी. पी. सिंह (पीलपालसिंह बी. ए.)

जन्म तिथि : १ दिसम्बर १९३५

स्थायी पता : कार्यालय विद्युत विभाग, उत्तर रेल्वे वर्कशॉप, बीकानेर

प्रेरणा के स्रोत : देशभक्ति ।

चीन हु की चुनौती ने भारत चैतन्य कियो
पाक की चुनौती वाको काल बनि छाई है
दुनिया के सारे देश देखत तमाशा देखो,
मूरख गंवार रिपु सुध बिसराई है
स्वारथ में फंसयो ऐसो निपट दिवानो भयो,
जगद्गुरु भारत से ठानि जो लड़ाई है
हिन्दु, सिख, मुसलमान एक सभी भारतीय,
निश्चय ही पाक तोपें कालराति छाई है !

सोच्यो नांहीं धन-जन हानि होगी कैतिक-सो,
बालक को खेलि जानि, छेड़ी यह लड़ाई है
सिहन के मुह को शिकार कूं लुभायो काहे,
अपनो हू लेगो अब मास नुचवाई है
सीख क्यूंनी लीनी चीनी सदा के ही दगाबाज
दुनिया को मूरति अनीति की दिखाई है
चले थे चौबेजी देखो छब्बेजी कहाने हेत
दूब्बे हू न रहै, पाक ! थोथी चतुराई है !

विजय हमारी है!

सुशील कान्त विसारिया

कवि-परिचय

नाम : सुशील कान्त बिसारिया

जन्म तिथि : १७ नवम्बर १९३२

स्थायी पता : एम. ३९३ सरोजनी नगर, नई दिल्ली

प्रकाशित साहित्य : फुटकर हिन्दी अंग्रेजी काव्य, लेख।

प्रेरणा के स्रोत : जिसने मुझे जीवन दिया और जीना सिखलाया।

जग उठो चलो भारतवासी
सीमा पर दुश्मन आया है
केसरिया बाना पहन बढ़ो
माता ने तुम्हें बुलाया है।

घमसान मोर्चों पर भारी
जोरियां-छम्ब पर धधक उठी
रणभूमि, वज्र गिरते नभ से
वीरों की छाती भभक उठी।

कीलर, सिन्धू, अब्दुल हमीद,
गुरुदासिंह ने गजब किया
कर दिया हौसला पस्त शत्रु
का, काम जगत में अजब किया।

जो देख रहा था सपना ग्ररि
काश्मीर कुसुम का टूट गया
हो गये चूर अरमान सभी
पापी का साहस छूट गया।

हमदर्द चीन, इण्डोनेशी
जो दुष्ट पक्ष के मित्र बने
वे खड़े-खड़े चिंघाड़ रहे
करते धरते कुछ नहीं बने।

भारत की विजय सुनिश्चित है
विश्वास ग्रटल है कण-कण का
यह वज्र लेख है अमर अटल
उन कोटि-कोटि जन-गण-मन का।

कवि-परिचय

नाम : बद्रीप्रसाद पुरोहित 'विशारद'

जन्म तिथि : १४ जुलाई १९४४

स्थाई पता : साले की होली, बीकानेर

प्रकाशित साहित्यः : स्फुट : हिन्दी व राजस्थानी में सन् १९६५ से बराबर लेखन। देश-प्रदेश के विभिन्न पत्रों में नियमित प्रकाशन।

प्रेरणा के स्रोत : मातृ-भाषा राजस्थानी के सुप्रसिद्ध साहित्यसेवी श्री मुरलीधरजी व्यास 'विशारद' से प्रेरित व प्रोत्साहित।

कण-कण में गूञ्ज रहा है
जय स्वर !
हम अपराजित हैं
हम महान् हैं !
हम अमन के पहरेदार
लोकराज के नायक !

बिगुल बजाया है सैनिक ने
युद्ध में रणभेरी के गान का
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई
हम सब एक हैं !

एकता की आन का
हमारा स्वाभिमान अमर है—
हम भारत हैं
हम महान् हैं
हम अजेय है
शक्तिमान हैं !

आंसू ?

करणीदान बारहठ

कवि-परिचय

नाम : करणीदान बारहठ

जन्म तिथि : १ अगस्त १९२५

स्थायी पता : बारहठ प्रकाशन, फेफाना (श्रीगङ्गानगर)

प्रकाशित साहित्य : 'झिड़ियों', 'बड़वानल', 'हरसर कंपा'।

प्रेरणा के स्रोत : आरम्भ में मुकुलजी व स्व० चन्द्रवेदजी फिर १९६२ में चीन के आक्रमण ने मेरे कवि को जगा दिया।

माँ तेरे बेटे ने माँ के हित में,
यह खून बहाया;
तुम इस त्यागी शव पर क्यों आँसू की
माला पहनातीं ?

कवि सोने की स्याही से जिस बलि पर,
इतिहास लिख रहा;
तू भावी पीढ़ी को इस मृत्यु पर,
क्यों रुदन सुनाती ?

मृत्यु ने सदा विजय पाई है इस,
निर्बल मानव पर;
पर तेरे बेटे ने, सच कहता हूँ,
यम को जीता है।

क्या हुआ गई, यह नश्वर काया तो
सबकी जानी है;
इस शाश्वत स्वर में माँ बेटे का
मानस जीता है।

तेरे आञ्चल का दूध सफल है, मां,
गौरव है तुमको;
तुम दीप जलाओ विजय-श्री के,
यह शुभ वेला है।

तुम धन्य तुम्हारा मातृत्व धन्य,
बलिहारी तुम पर;
तुम जन-मन को आह्वान सुनादो अब,
यह यह बेला है।

बहन, तुम्हारे भाई ने देश-हित,
यह खून बहाया;
तुम इस त्यागी शव पर क्यों आंसू की
माला पहनातीं ?

कवि सोने की स्याही से जिस बलि पर;
इतिहास लिख रहा;
तुम भावी पीढ़ी को इस मृत्यु पर,
क्यों रुदन सुनाती ?

तुमने राखी बांधी, तिलक लगाया,
हंस कर भेजा था;
उसने हंस-हँसकर मां की वेदी पर
यह बलि दे डाली।

यह मान तुम्हारे रक्षा-बंधन का,
हँस कर कहदो;
तुम एक नहीं इन लाखों बहनों की,
अब लाज बचालो।

जीवन जीवट, ज्वाला की लपटें हैं,
फिर डरना क्या है ?
जीवित यादों में सबकी जीवित है,
फिर मरना क्या है ?

तेरे धागों का शृङ्गार यही था,
सच पूछो तो;
तुम इस पर साहस के फूल चढ़ाओ,
अब हटना क्या है ?

ओ नारी, तेरे नर ने माँ के हित,
यह खून बहाया।
तुम इस त्यागी शव पर क्यों आँसू की
माला पहनातीं ?

कवि सोने की स्याही से जिस बलि पर,
इतिहास लिख रहा;
तुम भावी पीढ़ी को इस मृत्यु पर,
क्यों रुदन सुनातीं ?

तुम सबल करों में बंधी हुई थी,
फिर अबला कैसी ?
अब सबल साथ से दृढ़ बनी हो तो,
अब सबला वैसी ।

क्यों सुहाग को आज मिटाओ, देखो,
यह अमर हो गया;
तुम सबल स्वरों में गान सुनाओ,
अब प्रबला जैसी ।

तुमने जौहर की ज्वालायें देखीं,
जलना आता है;
तुम तो झासी की रानी हो, नारी,
मरना आता है ।

कौन यहां सोया है सब जागे हैं,
जगतो को कहदो,
कोई जगता पर जुल्म करे तो फिर,
लड़ना आता है ।

जगे भारती कल्याणी !

बुलाकीदास 'बावरा'

कवि-परिचय

नाम : बुलाकीदास 'बावरा'

जन्म तिथि : १७ जुलाई १९३५

स्थायी पता : सुथारों की बड़ी गुवाड़, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : स्फुट

प्रेरणा के स्रोत : माँ की प्रताड़ना।
मामा श्री मुरलीधर व्यास एम. एल. ए.
की साहित्य-साधना से उत्प्रेरित।

पलट न पाए पलटन अपनी, अपनी निर्भय वाणी
बलिदानों की शुभ देहरी पर, नाचे हिन्द जवानी

भटकी हुई चेतना लौटी, कहो शत्रु से ठहरो !
लोहा लो, इस मजबूती से, सभलो ठहरो !

भड़क उठे दावानल उर में ऊंची रहे निगाहें
शक्तिधरों की शक्ति प्रदर्शक ये फौलादी बाहें

महम् भरी आहटें अनुपम कडुवाहट रस घोले
कहीं पहेली बनकर आंधी सौरभ के मिस बोले

पौरुष-धर्म परमता समझो ! जागो चिन्मय व्रतिधारी
भय को भेंट पुलक में निकले, दुःख होवें हितकारी

जय बाजे उन्मत्त नगाड़े जगे भारती कल्याणी
पलट न पाए पलटन अपनी, अपनी निर्भय वाणी

जौहर जगे जवानी का फिर जागे जोश जवानी
दुनियां जाने खून खून है पानी केवल पानी

भभक उठे अङ्गारे अब तो हम सब अग्निदूत
तपःपूत हैं बलिदानों से, प्रण-प्रसूत रणपूत

भेदभाव की खुली अर्गला, मुक्त मुक्तिका द्वार
कफन करोड़ो शीषों के अब फिर सुनलो तैयार

करो मरण का वरण सुमङ्गल, जागो हिन्दुस्तानी !
पलट न पाए पल्टन अपनी, अपनी निर्भय वाणी !

सांझ रा गड़क्या नगारा

भीम पांडिया

कवि-परिचय

नाम : भीम पांडिया

जन्म तिथि : १९ जुलाई १९२९

स्थाई पता : आशापुरा, नया शहर, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : कविता संग्रह : हाथ सूं कतर लीनो बोरलो, पत्र-पत्रिकाओं में व अकादमी प्रकाशन में कविताएं संग्रहीत। अलगोजो व धागां रा फूल में कविताएं संग्रहीत। राजस्थान राज्य सरकार के पाठ्यक्रम में आठवीं कक्षा में संग्रहीत 'दिवलै री जोत', आकाशवाणी जयपुर बीकानेर से संबद्ध।

प्रेरणा के स्रोत : मेरा युग और मेरा जीवन।

सांझ रा गड़कया नगारा
देवरां झालर झणकारा
विजय हो जय हो रा नारा
मोरिया जय बोलें प्यारा
सांझ रा गड़कया नगारा !

मिलादां कांधे सूं कांधा
कदम सूं कदम जोड़दां
घुळादां सांस सांस सूं सांस
शत्रु रो माण फोड़दां
सांझ रा गड़कया नगारा !

● एक सौ पच्चीस

भ्रष्ट मन पूठा मुड़जासी
सुळोड़ा पगां तळै स्रासी
माडदां एकै पर एको
बदळ दिनमान बदळ जासी
सांझ रा गड़क्या नग्गारा !

प्राण प्राणां पर उलटादा
दूध रो परचो दिखळादा
देश री प्रीत निभादा आज
विजय रो डङ्को बजवादा
सांझ रा गड़क्या नग्गारा !

सावधान !

कन्हैयालाल सेठिया

कवि-परिचय

नाम : श्री कन्हैयालाल सेठिया

जन्म तिथि : आश्विन शुक्ला प्रतिपदा वि० सं० १९७६

स्थाई पता : रतन निवास, सुजानगढ़

प्रकाशित साहित्य :

हिन्दी	राजस्थानी
वनफूल	मींझर
मेरा युग	गलगचिया
दीपकिरण	रमणिए रा सोरठा
अग्नि वीणा	
प्रतिबिम्ब	
अहरह	

प्रेरणा के स्रोत : अन्तर्पीड़ा

बनो नही तुम तीसमारखाँ
उस सुकर्ण के वादों पर,
फेर दिया टुंकू ने पानी—
जिसके बुरे इरादों पर,

युद्ध नहीं है खेल, युद्ध के—
लिये हमें उकसाओ मत,
मत खूँदो नागों की बांबी
सोये सिंह जगाओ मत,

यह जौहर का देश यहाँ पर
रीत केसरी बाने की
यहाँ पूछते कब आएगी—
बेला शीश चढ़ाने की ?

सावधान, अपनी सीमा से—
आगे कदम बढ़ाना मत,
मेरे बन्द द्वार पर दस्तक—
देकर मरण बुलाना मत।

तुम भारत हो

अम्बिकादत्त शास्त्री

कवि-परिचय

नाम : अम्बिकादत्त शास्त्री

जन्म तिथि : आश्विन शुक्ला पूर्णिमा १९९२

स्थाई पता : गोस्वामी चौक, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : स्फुट : आकाशवाणी से सम्बद्ध।

प्रेरणा के स्रोत : प्रकृति से प्रेरित।

सीमाओं पर, मंडराते ये,
दस्यु, लुटेरे—
इनकी बर्बरता बेमिसाल है—
इनको पता नहीं है—
भारत सदियों से,
अपराजित है—
भारत विशाल है।

आग्नेय कण-कण—
इस धरती का
हम भारतीय—
सदा अप्रतिहत रहे हैं।

उन्नत भारत का
रहा भाल है—
बलिदानों की मङ्गल बेला
फिर आज आ गयी।

उठो!
तरुण!
तुम भारत हो!
तुम भारत की सत्ता हो!
तुम प्रभुता हो,

भारत की महत्ता हो !
सीमाएं क्या कोरी रेखाएं ?

रे ! नहीं—
इनके साथ जुड़ी है
पुरा-सभ्यता
संस्कृति, धर्म और पौरुष की,
परम्पराएं—

यह देश
अविजित महान्
विश्व के लोकराज का
पावन प्रहरी
इसकी शक्ति
अपरिमित
इसकी रक्षा-हित
हंसते-हंसते
कौन न देगा,
जीवन का बलिदान ?

मृत्यु नहीं यह तो
जीवन का
मङ्गलपर्व महान्
यह तो शाश्वत है अभियान।

जीते तो यश, मरे स्वर्ग है

डा. भंवर लाल

कवि-परिचय

नाम : डा० भंवर लाल

जन्म तिथि : २५ अक्टूबर १९४०

स्थायी पता : डा० भंवर लाल

प्रकाशित साहित्य : स्फुट रचनाएं, गीत व मुक्तक ।

प्रेरणा के स्रोत : सन् १९५२ में देश की आर्थिक दुर्दशा से व्यथित होकर वर्तमान नीति मे क्रान्ति लाने के लिए शोषण के विरुद्ध लेखनी को देश की उन्नति हेतु समर्पित किया ।

भारत जनगण भाग्य विधाता अब तो निद्रा त्याग रे
आज देश की सीमाओं पर आग बिछी है आग रे

बहुत किया अन्याय कि जिसको हमने अपना समझा था
छुरा पीठ में घोंपा जिसने हमने अपना समझा था

मानवता के हत्यारे मिल आज लगाते घात रे
जाग भारती पुत्र जाग ! मा अब देती आवाज रे
भारत जनगण भाग्य विधाता· · ·

अब फिर ऐसी ज्वाला जगादे, जनजन को ऐलान सुनादे
इन्कलाब का बिगुल बजादे, मातृ चरण में शीश चढ़ादे

आजादी खतरे में साथी पर तू नहीं अनाथ रे
कोटि-कोटि भुज देख उठे हैं, कोटि चरण हैं साथ रे
भारत जनगण भाग्य विधाता······

● एस सी संतोष

राणा सांगा की संतानों बप्पा रावल के प्यारों
आज दिखादो जौहर अपना आजादी के रखवारों

छोड़ चले मैदान शत्रुदल, करो करारा वार रे !
जीते तो यश मरे स्वर्ग है, हुई न होगी हार रे
भारत जनगण भाग्य विधाता''' ।

वीरां रौ विड़द

नानूराम संस्कर्ता

कवि-परिचय

नाम : श्री नानूराम संस्कर्त्ता

स्थाई पता : कालू (लूनकरणसर) ।

प्रकाशित साहित्य : कलायण (काव्य), दस देव (काव्य), जागरण (काव्य), बटोही, अनोखा ओखाणा (कहावत-वार्ता), दोट बावनी, नीति शतक (राजस्थानी)

प्रेरणा के स्रोत : राजस्थानी भाषा व साहित्य की महानता ।

दूर दुनी में सूर सदा सूं रंता आया
सात समंदरा पार-भादरां नांव कमाया
जङ्ग बांकियां जोर बज्या ढामक अलबेला
कढ्या सिपाही क्रूर लिया हाथा में सेला
जबर जुवाना हुयो लड़ाई रो ललकारो
दसूं दिसावां दाकळ दीनी मारो-मारो
मायड़ भोमो खो.ळ सेलतां मोज मनाई
अगर उणीरै माथ आपदा आधी आई
निजरी जिनड़ी सूंप मात आबरू उबारी
सांस सांस में रियो जठे तक दीनी हारी
थैड़ो करड़ी धार पूत ऊंठा चढ धाया
चैं'नां आगे ऊभ मांगळी तिलक कढाया
विजै वरण रा गीत वैनड़्यां अजब अगीरा
'राजस्थान री रीत जीत कर भाज्यो बीरा'
घोर लड़ाई लगी, तोप बन्दूका चाली
मस्तक दोटा दिया पड़ी मेतां धड़ खाली

जद रण रा रजपूत बांकड़ा रङ्ग में आया
दुसमण रो दल वाढ़ काढ़दी सतरां छाया
घमक्या घणा निसाण तुरी उच्छब गरणाई
डगरचा डार्डा जुड़ी, दीवटां जोत चसाई
अबै भळे भारथ कांकड़ पर कष्ट दिखावै
अबैं भळे भारथ सीवा पर दुसमण धूम मचावै
जोधा आगै जाय राख रिपुवांकर आसी
रण-राता रङ्ग रळी कळी खिल जग गुण गासी
विजय-विजय सौ बार सदा सूं आपांरी है
दुसमणिया सिर चोट भारथी भालां री है
वीरा री विसवै में वाला वात दगी है
भारथ रै सुखारय था पर आंख लगी है
शत्रु काग री आंख फोड़ कर पाल्या काटो
मरसी अपणी मौत : भाइड़ां धीरज राखो !

तुमने सोता शेर जगाया, बुरा किया !

विश्वनाथ सचदेव

कवि-परिचय

नाम : श्री विश्वनाथ सचदेव

स्थाई पता : पत्रकारिता विभाग, हिसलप कालेज, नागपुर

जन्म तिथि : २ फरवरी १९४२

प्रकाशित साहित्य : स्फुट

प्रेरणा के स्रोत : स्वान्तः सुखाय ।

ज्ञान मिलेगा अब तो खूनी प्यालों से,
गौतम ठुकरा देगा दूध सुजाता का,
ग़ैर मना अपनी सोने की लङ्का का,
तूने बुरी नज़र से देखा सीता को,
तूने केश द्रोपदी के फिर से खोले,
अरे दुशासन, भूल गया तू गीता को ?
भाई जान लगाया हमने गले तुझे—
तू दुश्मन बनकर है आया, बुरा किया।

तुमने सोता शेर जगाया, बुरा किया !

हम तो वतन के वास्ते कुर्बानी दे रहे !

भरत व्यास

कवि-परिचय

नाम : भरत व्यास (लोकप्रिय हिन्दी कवि एवं सिने-गीतकार)

जन्म तिथि : १७ सितम्बर १९१८

प्रकाशित साहित्य :

रङ्गीला मारवाड़
ढोला मरवण
ऊँट सुजान
मरुधरा
राष्ट्र कथा
रिमझिम
तीन्यूं एक ढाल
आत्म-पुकार
धूप-चांदनी
तेरे सुर मेरे गीत
अङ्गारों के गीत (प्रकाशनोन्मुख)

प्रेरणा के स्रोत : जीवन-संघर्ष

हमारे जवान ये हमारे जवान !
दिलों में जिनके आग है, हथलियों में जान—हमारे जवान !!

ये चाहें गर तो धूल में भी फूल खिलादें
ये चाहे तो वतन को अपना रक्त पिलादें
ये चाहे गर तो जुल्म जहान हिलादें
ये चाहे तो जमी को आसमा से मिलादें

शक्ति 'शिवा महान' की 'प्रताप' की है शान
हमारे जवान ये हमारे जवान !

झंडा है इनके हाथ में भारत की शान का
इतिहास दे रहा प्रमाण इनकी आन का
'एटम' कही भड़क उठा जो इनके प्रान का
जवान ये मुकाबला करें जहान का

'बापू' की है ये आतमा और 'नेहरू' की जुबान
हमारे जवान ये हमारे जवान !

अपने वतन के लोगों से ये साफ कह रहे
हम तो वतन के वास्ते कुर्बानी दे रहे
हम तो वतन के वास्ते कट-कट के सो रहे
आखों में भर के पानी हाय तुम क्यूं रो रहे

आंसू नहीं हमें दो अपने खून ही का दान
हमारे जवान ये हमारे जवान !

माताओं आज है तुम्हारी कोख यह अमर
बहिनों तुम्हारी चूड़ियों में गजब का असर
बहुओं तुम्हारी माङ्ग के मोती गए संवर
गाओ विजय के गीत पर न होना बेखबर

भारत में लिखा जाएगा अब इक नया पुरान
हमारे जवान ये हमारे जवान !

कड़खा

श्रीमती कृष्णा बिसरिया एम. ए, बी. एड.

कवि-परिचय

नाम : श्रीमती कृष्णा बितरिया

जन्म तिथि : सन् १९४०

स्थायी पता : ३५५, बामनपुरी, बरेली

प्रकाशित साहित्य : फुटकर लेख, कविताएं

प्रेरणा के स्रोत : सत्यान्वेषण

देश के वीर जवानों जागो।
बहुत दिनों के बाद समर का अवसर आया।
बहुत दिनो के बाद युद्ध ने हमें बुलाया।
देखे दुनियां भारत के रणवीरों की तलवारें।
झेलें शत्रु पीठ पर पड़ती हुई गाज की मारें।

टूट जायं विष-दन्त न मुड़ कर हेरे।
घिर जायं वज्र से महाकाल के प्रेरे।
वे भूल जायं कश्मीर और भारत को।
ले जायं प्राण के साथ देह विक्षत को।

हम शान्त, तभी तक शान्त बने रहते हैं।
हम मौन, तभी तक मौन घने रहते हैं।
जब तक अरि का अभिशाप न पूरा होता।
जब तक भरजाता नहीं पाप का सोता।
सीमा का अतिक्रम सहन हमें कब होता ?
फिर युद्ध-भूमि को अरि-शोणित ही धोता।

देश के वीर जवानों जागो,
बहुत दिनों के बाद युद्ध का अवसर आया।
चारण ने रणवाद्य बजाया, कड़खा गाया।

जिण धर खातर सीस चढ़ै नित

रामनाथ व्यास परिकर

कवि-परिचय

नाम : रामनाथ व्यास 'परिकर'
सह संपादक 'सहकार पथ' नई दिल्ली

जन्म तिथि : १५ मई १९२९

स्थायी पता : सोनगिरी कुवा, बीकानेर

वर्तमान पता : के १४, कैलाश कालोनी, नई दिल्ली।

प्रकाशित साहित्य : कवीन्द्र रवीन्द्र रचित 'गीताञ्जली' का राजस्थानी काव्यानुवाद राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित।
खण्ड काव्य 'प्रकाशनाधीन' (1) रगत-भवर (२) हिवड़ै रा बोल (३) जोबण जागे (४) रवीन्द्र दर्शन शतक (५) मनवार।

प्रेरणा के स्रोत : मेरे साहित्य की प्राण-प्रेरणा स्वर्गीय श्री सूर्यकरणजी पारीक की अनथक राजस्थानी भाषा व साहित्य की साधना रही है।

गढ़ नवकोट, देस रा तोरण
मारवाड़ रा मोटा मान ।
धिन-धिन रे मायड़ रा मोभी
राठोड़ां रा सुजस महान् ॥

रजवट थाण रातनो आयो
भायो नित सूरां संताण ।
जद 'अजीत' 'दुरग' रा देखळ
'अमर' रा दीपंता माण ॥

कायर-क्रूर कपट सूं चालै
घालै दुष्ट घरां में हाण।
मरदां किसा माछरां-वूंयां
के डरपावै हीणा जाण ?

जिण घर खातर सीस चढ़ै नित
रगत उफण झूंसै घमसाण।
निवै न मा, चावंड मात रो
गढ़-कोटां में घुरै निसाण।।

जय है हाथ हमारे

कान्ह महर्षि

कवि-परिचय

नाम : कान्ह महर्षि

जन्म तिथि : गुणवन्ती मरु-मयंक (राजस्थानी काव्य)

प्रेरणा के स्रोत : साहित्य-प्रेम

(१)

उत्तर-पश्चिम के ये बादल, ये दम तोड़ हवाएं
काले-काले मेघ प्रलय के, उमड़-घुमड़ कर आए
हम भी तो तूफान बवण्डर, विद्युन्मय अङ्गारे
मांझी ! कश्ती को संभालो, जय है हाथ हमारे।

(२)

हो न दिशा-भ्रम ताकत तोलो ताको एक किनारा
भंवरजाल कितने ही ऐसे, लिए हुए जल-धारा
पता नहीं कितने मगरों की, जल में छिपी कतारें
मांझी ! कश्ती को संभालो, जय है हाथ हमारे।

(३)

हम कमजोर नहीं है नाविक, जब हथियार उठाएं
वज्र गिरे भूतल फाटे या, क्यों न ज्वार उठ आएं
चाहे भूतेश्वर संगर मे काल धनुष टङ्कारें
मांझी ! कश्ती को संभालो, जय है हाथ हमारे।

(४)

कण-२ महा आग का गोला, फाग समर का खेला
हर कतार खिलती कलियों की ज्वालाओं का मेला
उफन रहा है जोश, सुनें जब सीमा की हुँकारें
माँझी ! कश्ती को सभालो, जय है हाथ हमारे।

(५)

अलका खाक मिली पतझर में, जूझ पड़ा हिम प्रहरी
त्रिविष्टप के जन-जीवन को चाट गया वह जहरी
क्षमा-दान को समय नहीं, बस महादेव उच्चारें
माँझी ! कश्ती को संभालो, जय है हाथ हमारे।

हंसते हंसते पार करेंगे,
जो सङ्कट घिर आया है !

खड़गावत मालचंद

कवि-परिचय

नाम : मालचंद सकुनावत, संपादक 'पञ्च', जयपुर

जन्म तिथि : २४ जनवरी १९२८

प्रकाशित साहित्य : सीमा रेखा······(काव्य)

प्रेरणा के स्रोत : साहित्य के माध्यम से समाजवादी समाज व्यवस्था के लिए सक्रिय योग-भावना।

हंसते-हंसते पार करेंगे
जो सङ्कट घिर आया है।

कच्छ से चलकर
युद्ध की आंधी,
सिक्कम सीमा तक फैली है।

अभी-अभी
हमने दुश्मन से
खून भरी होली खेली है।

लेकिन अब भी
जङ्ग का पञ्जा
छूट नहीं पाया है।

न जाने वह
कब कस जावे,
जो हम पर छाया है।

उत्तर में बैठे हैं,
चीनी
घात लगाए।

सीमाओं पर
अब भी हैं,
युद्ध के घन छाए।

न जाने वे
बरस पड़ें कब
उमड़-घुमड़ कर।

सस्य श्यामला
भारत की
धरती के ऊपर।

लेकिन हम भी
तो अब इनसे
पहले से अनजान नहीं है।

सारी दुनियां मान गई है
कि हम भी
बेजान नहीं हैं।

नाकों चने चबाए
हमने
हमलावर को।

जीत लिया है
हमने
अपने मन के डर को।

अब हमसे
कोई भी चाहे
टकरा जावे

पीछे नहीं हटेंगे हर्गिज,
नहीं मुड़ेंगे
दायें बायें।

सीधी छाती
लड़ना हमको
तो सदियों से भाया है ।

हंसते-हंसते
पार करेंगे
जो सङ्कट घिर आया है ।

राष्ट्र संवरण

जगमोहन मित्तल एम. ए.

कवि-परिचय

नाम : जगमोहन मित्तल एम. ए.

जन्म तिथि : १५ जून १९३१

स्थायी पता : प्राध्यापक, डूंगर कालेज, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : हमारे मान-बिन्दु

प्रेरणा के स्रोत : समाज-कल्याण की भावना से अभिभूत होकर।

संघर्ष
स्वत्व के लिए
सदैव होता रहा है
हर देश में हर काल में
भले इतिहासकार इसे पुकारें
युद्ध !

किन्तु यह स्थिति दुर्निवार है
प्रगति का एक आवश्यक चरण है
संघर्ष
क्रान्ति के लिए : शान्ति के लिए
सदैव होता रहा है—
सन्नद्धता सहित !

अनय और दुराचरण का—
निवारण नितान्त पवित्र कर्म है
चिन्ता
जय-पराजय की नहीं

विराट प्रश्न उपस्थित हो जाता है
जब जन्म-मरण का
तब कोई देश—
इकतरफा शान्तिजाप कैसे कर सकता है ?

इसीलिए हम सशस्त्र हुए हैं—
यह नवराष्ट्र संवरण
अभिनंदनीय है
वन्दनीय हैं हमारे
वे सब दिवंगत प्राण
जिनके बलपर जयी हुआ है
भारतवर्ष महान् !

माई रो लाल

सत्यनारायण प्रभाकर 'अमन'

कवि-परिचय

नाम : सत्यनारायण प्रभाकर 'अमन'
रेडियो कलाकार, आकाशवाणी जयपुर केन्द्र

जन्म तिथि : ११ दिसम्बर १९२६

प्रकाशित साहित्य : सोसवान, चूंठिया (राजस्थानी-काव्य)

प्रेरणा के स्रोत : मेरी स्वर्गीया बहिन । माँ मरुधरा की ममतामयी गोद ।

जोधा तेग संभाळ !
चामंडा नै आज चढ़ादे अरि-मुण्डां री माळ।

कड़खाळी रो भर खप्पर भैरू री भूख भंजादे,
अणन्हाई ना रवै जोगण्यां रगतां-न्हाण करादे,
धिजै सह्बणी, डाकण-स्यारी, भूत-प्रेत वेताळ।
जोधा तेग संभाळ !

करै कांवळा घाव कळेवो लोथां-लोथ बिछादे,
खून-खाळिया बगा जिकां मे अणगिण सीस तिरादे,
मां रै सा'मो माथ उचै जो कर नाखे दो डाळ।
जोधा तेग संभाळ !

गाज तेरली सुण वैरी रा फाड़ा-सा जुड़ ज्यावै,
रैतां रळता ही दीसै तूं जिनै भवानी बा'वै.
रण खेतर में आज इस्यो वण महाकाळ विकराळ।
जोधा तेग संभाळ !

अंबर धूजै, धरा धिसक्कै, इसड़ी बगा दुधारी,
तनै जीतणो चावण वाळो सावै हार करारी,
ऊंचो सात जलम ना भावै इस्यो पड़ै ओटाळ।
जोधा तेग संभाळ !

रण आङ्गण में एकल-हत्थी इसी बजा वळकारी
बैरयां रा मां-बाप सींचता रोज रवैं पंथवारी
मौत भूलज्यै मुड़दा गिणनो इतरा माथ उछाळ।
जोधा तेग संभाळ !

जङ्ग करै तो बो-कर जोधा जम नै झोबा आज्यै,
नांव लिया धरणा कांपै बैरयां रा गर्भ गळादयै,
धक्कै स्यूं जो धरा धुजादयै बो माई रो लाल।
जोधा तेग संभाळ !

आहूत्यां आज अड़ीके है

गिरधारी सिह पड़िहार

कवि-परिचय

नाम : श्री गिरधारी सिंह पड़िहार

स्थाई पता : हनुमान हत्था, बीकानेर

जन्म तिथि : १९ जुलाई १९२०

प्रकाशित साहित्य : जागती जोतां, मानखो (राजस्थानी काव्य संग्रह)

प्रेरणा के स्रोत : राजस्थानी भाषा व साहित्य से अभिभूत होकर लेखनी सजग हुई। रानी लक्ष्मी कुमारी चूंडावत की साहित्य-साधना व राजस्थानी साहित्य सेवा से मुझे अन्तःप्रेरणा मिली है।

वीरां ओ अंटळ धरम घर रो आयां न पाछो जाणो है
कुण जाणे कद पींजर छूटे, मांमां री किसो ठिकाणो है
आ काया प्राण पंखेरू रा दो च्यार दिनां रा बासा है
जूझ्यां रा नांव अमर रयग्या, दूजी इण स्यूं के आसा है
मरणो तो नेचे अंतपंत, पण ऐडी मौत कठै मिलसी
जिण,ठोड़ पड्यां तन पूजीजे, वा जागत जोत कठै मिलसी
जस जीत्यां मर्‌यां सरग सामै,मां धरती सातर कटै गळा
नित सिमरथ सूर मढ़ोकै, पण अेड़ा दिन आवै जो वरळा
जद मातभोम लूंटा लूंटे, अड़ ज्यावै सिंघ सपूत जका
कवि कैता आया रज कारण, रज-रज कटग्या रजपूत जका
आ जुगां-जुगां री रजपूती, रासण नै आज कटयां सरसी
म्हाभारत रै पारथ दाई साथ्यां सिर सांभ कट्यां सरसी
जुध जीता, का तन थोपण नै, गोल्यां री झड़-झड़ियां है
इण प्रजातंत्र-गढ़ री पोळां, अे आज परख री घड़ियां है
रण रुप्यां मानसो मोट्यारां, जिण वळ री छात्यां आस रह्यो
वे आपां मुख हां भारत रा, जग-गण जिण रै विस्वास रह्यो
सत जांचे सूर सिपाही रो, अे आज घड्यां वे जागी है

भारत रा अर्ज जवानां पर, अवनी री आंख्यां लागी है
जुदां जूझे जूझारां री, आहूत्यां आज अड़ीकै है
पग-पग थर्मापोळी वाळी, धरती री लाज अड़ीकै है
सिर कट ज्यावै पण झुकै नहीं, वीरां वा आण अड़ीकै है
झांसी चीतोड़ सितारा री, दिल्ली री स्यान अड़ीकै है
पातळ गोविंद सुभास सिवा सूरां रो माण अड़ीकै है
उण रामराज रै रसियै रो, मोटो बलिदाण अड़ीकै है
पत पूरवली रगता सींची कूंतोजै हिमघर चोटी पर
भीवा भारत रो प्रजतन्त्र चढ़ग्यो है आज कसौटी पर
कितरो है मोल तिरङ्गे रो, अरि दूखण आया मोट्यारां
जद म्राज मरण ही मङ्गळ है, मत नाड़ निवायो मोट्यारां
रिसि मुनियां पीर फकीरां री, सूफ्यां संता री धरम धरा
जौहर री ज्वाळा जठै जगै, रङ्ग केसरियै रो परम्परा
वा मरजादा सिर सारै री, तिणकां रै तोल नहीं जावै
है आण भारती री भीवां, इज्जत अणमोल नहीं जावै

कश्मीर हमारा है !

कामेश्वर दयाल 'हज़ीं'

कवि-परिचय

नाम : कामेश्वर दयाल 'हज़ीं'

जन्म तिथि : ७ जुलाई १९१५

स्थाई पता : हैडमास्टर, सिटी हायर सेकेण्डरी स्कूल, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : 'सिन्दबाद' संग्रह में, मशहूर देहली में कहानियों का व गज़लों का प्रकाशन।

प्रेरणा के स्रोत : ग़ालिब, फनी बदायूनी, मीर तकी मीर, टॉलस्टाय, मुन्शी प्रेमचन्द।

कश्मीर का हर ज़र्रा जन्नत का नज़ारा है।
मर कर भी नही देंगे यह जान से प्यारा है॥
सद हैफ़ कि दुश्मन ने यह बात नही समझी।
सौ बार गो समझाया कश्मीर हमारा है।
उस सिम्त दगरता का गोली से उड़ा देंगे।
इस वक्त बुलन्दी पर किस्मत का सितारा है॥
हम अम्न के हामी हैं तामीर के खूगर हैं।
हमने रखे गेती को जुल्फों को सँवारा है॥
हो चीन या पाकिस्तां मिट जायेंगे दुनियां से।
तखरीब के हामी को यह गैबी इशारा है॥
काफ़िर, न मुसलमां हैं, इन्सान हैं हम हिन्दी।
सब फूलें फलें जग मे अपना यही नारा है।
हम एक ही मज़हब की अज़मत के नहीं क़ायल॥
काबा भी कलीसा भी मन्दिर भी हमारा है॥
लालच नही दुश्मन की इक इंच ज़मीं का भी।
न अपनी जमीं देना इक इंच गवारा है॥
हम अम्न पसन्दों को खूँखार दरिन्दों ने।
मजबूर किया इतना लड़ने पे उभारा है॥

तू बर्के बला बन कर गिर लशकरे-दुश्मन पर।
जाबाज जवां तुझको माता ने पुकारा है॥
तू राह पे है हक की और साथ मशीयत है।
और (पाक) की कश्ती को ग़ैरों का सहारा है॥
लोहा तेरा माना है, अफवाहजे मुख़ालिफ ने।
कश्मीर में कुचला है लाहौर में मारा है॥
जो पांव बढ़ाया है हरगिज़ न हटे पीछे।
कदमों तले मञ्जिल है और पास किनारा है॥
ग़ैरों के समझने से होता ही 'हजी' क्या है।
कश्मीर हमारा है कश्मीर हमारा है॥

कवि-प्रहरी जागो !

गोविन्दलाल व्यास

कवि-परिचय

नाम : गोविन्दलाल व्यास

जन्म तिथि : २ सितम्बर १९२१

स्थायी पता : छबीली घाटी, गोगा गेट, बीकानेर (राज०)

प्रकाशित साहित्य : 'निबन्ध सरोज' (सह-लेखक श्री जानकी प्रसाद उपाध्याय) पत्र-पत्रिकाओं में स्फुट कविताएं, लेख, नाटक व कहानियां प्रकाशित होती रहती हैं।

प्रेरणा के स्रोत : डॉ. गोपीनाथ तिवारी के प्रोत्साहन से।

अब तो नभ के तारों को गिनना छोड़ो।
सुन्दरियों की अलकों में बंधना छोड़ो।
अब आंख-मिचौनी चन्दा से क्या खेलो?
ग्रह-पथ में टकराने से छुट्टी लेलो।

सपनों की दुनिया उजड़े तो जाने दो।
नयनों की नदियों को बह-बह आने दो।
मानस-मंदिर की प्रतिमा क्या सुख देगी?
छाया मिट जाए तो भी मिट जाने दो।

नभ के कोनों में स्वर्ग ढूंढते फिरते?
नक्षत्रों की दुनिया को स्वर्ग बताते!
कल्पना-लोक के वासी कवि! तुम क्यों फिर
भूतल से नाता तोड़ स्वर्ग-सुख पाते!

पलकों की शैया पर यह निद्रा-बाला,
है तुम्हें रिझाने, मस्त बनाने आई।
तुम भूल रहे अपने को ऐ कवि-प्रहरी!
जो दुखद वस्तु है, मान रहे सुखदाई।

अब सजग बनो, देखो तस्कर हैं आये,
भूतल को देखो, है विनाश की लीला।
जो स्वर्ग बना था, आज नर्क दिखलाता,
फिर भी मन का यह तार रहे क्यों ढीला ?

इस भू पर ही है स्वर्ग, उसे तुम पाओ।
उसकी रक्षा है इष्ट, उसी हित आओ।
तस्कर निशाचरों का विनाश निश्चित है,
सोये मानव की गहरी नींद जगाओ।

कवि-प्रहरी ! जागो, रहो जागते तुम तो।
अच्छा न रहे यह रहो भागते तुम तो।
जब जग सोता है, जाग रहा है योगी।
तब तो जय निश्चित उसकी होगी।

अब अन्तिम प्रहर रात का होने आया।
बस थोड़ी-सी है रात शेष होने में।
सूरज उगने पर लाल किरण आयेगी।
फिर छिप जाएगा लाभ नहीं खोने में।

उठो पौरुष-पूजकों !

भूरालाल पाण्डे 'विनेश'

कवि-परिचय

नाम : भूरालाल पाण्डे 'दिनेश'

जन्म तिथि : १६ मार्च १९११

स्थाई पता : अधीक्षक, जिला बन्दीगृह, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : स्फुट

प्रेरणा के स्रोत : जयशङ्कर प्रसाद व भारतेन्दु हरिश्चन्द्र।

शहीदों की अर्चना के
गीत गाओ आज सब मिल
भारती का गौरव बढ़ाओ
शहीदों के शोणित की पवित्रता
पुकारती है
उठो इस माटी का तिलक लगाओ
कि,
जिस माटी में शीशदान दे
धन्य हुए हैं वीर
स्वदेश मान मर्यादा के लिए
जान की बाजी लगाओ

विजय की दुन्दुभी बजाओ
ध्वज तिरङ्ग फहराओ
इतिहास फिर से लिखो
भारत के शौर्य का
उठो फिर फौलादी भीम-भुजाओं का
पराक्रम दिखाओ
उठो पौरुष-पूजकों
उठो मानवी जन्म
सफल बनाओ ।

कवि-परिचय

नाम : लालचन्द 'ललित'

जन्म तिथि : ८ फरवरी १९३३

स्थाई पता : कोचरों का मोहल्ला, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : स्फुट

प्रेरणा के स्रोत : अन्तःस्फूर्त ।

आज देश को नए जवान चाहिए
महान देश को हमें महान शान चाहिए

जो आग से भी खेल ले, तूफान हंसके झेल ले
उठे बढ़े उमङ्ग से, जो एकता का ध्येय ले
मातृभूमि का हिये अरमान चाहिए
आज देश को……

रगों में खून खौलता, जय भारती को बोलता
रुके नहीं कभी भी चाहे काल सिर पै डोलता
ऐसे धीर-वीर औ' महान चाहिए
आज देश को ……

पहाड़ तक तोड़ दे—तूफान को भी मोड़ दे
कफन शीश बांध के जो मौत से भी होड़ ले
वीरता के साथ स्वाभिमान चाहिए
आज देश को……

उठो धरा पुकारती, जगा रही है भारती
उठो महान देश के, सशक्त शूर सारथी
कोटि-कोटि कंठ कीर्ति गान चाहिए
आज देश को……

जो शत्रुओं का काल हो, हृदय में जिसके ज्वाल हो
चरणों में मातृभूमि के, विनीत जिसका भाल हो
मरण वरण जो करे वो प्राण चाहिए
आज देश को……

विजयास्था

डॉ. नरेन्द्र भानावत, एम. ए., पी-एच. डी.

कवि-परिचय

नाम : डॉ. नरेन्द्र भानावत

जन्म तिथि : १३ सितम्बर १९३४

स्थायी पता : हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्व विद्यालय, जयपुर, सी-२३५ ए तिलक नगर, जयपुर

प्रकाशित साहित्य : १. राजस्थानी वेलि साहित्य (शोध-प्रबंध)
२. राजस्थानी साहित्य : कुछ प्रवृत्तियां (आलोचना)
३. विष से अमृत की ओर (एकांकी)
४. कुछ मणियां : कुछ पत्थर (कहानियां)

प्रेरणा के स्रोत : अध्ययन, मनन, चिन्तन ।

मैं अखण्ड विश्वास,
अमित बल,
पूर्ण संगठन,
अमृत,
अक्षय !

मेरी सीमा अमिट, अबाधित
लक्ष्मण-रेखा ।
घुसपैठी रावण को हमने
—जब-जब आया—
जलते देखा ।

मेरे रोम सभी को पुलकन
मुक्त हस्त से बाँटा करते।

पर—
जब इनके इर्द-गिर्द छलना मंडराती,
निरपराध प्राणों पर निर्मम घातें होतीं,
तब-तब—
फूलों के इन हथियारों से गोले-बारूद,
कूलों की शीतल धारा से अग्नि-वर्षा
रोम-रोम से भेदक तोपें—
स्वतः छूटतीं।

मैं विजयास्था—
नापाक इरादों की छाती,
अपने पद से कुचला करती।

मैं अखण्ड विश्वास,
अमित बल,
पूर्ण संगठन,
अमृत,
अक्षय।

वक्त है अब भी चेतो !

पूरनचन्द 'राजीव'

कवि-परिचय

नाम : धूड़चन्द सोनी 'राजीव'

जन्म तिथि : ८ मार्च १९३६

स्थाई पता : कोचरों का चौक, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : एक काव्य संग्रह—जंजीरें टूटेंगी

प्रेरणा के स्रोत : जीवन ।

यह ठीक है कि हम अहिंसा के पुजारी हैं
मगर हमलावर के लिए तलवार दोधारी हैं
हमें आजादी जान से भी अधिक प्यारी है
यह न भूलो भारत असुर संहारी है !

अठारह साल तक फरेब खाते रहे हैं
दोस्ती के बदले दुश्मनी पाते रहे हैं
अमन की खातिर क्या न सहा हमने ?
शत्रु को भी मित्रवत् मनाते रहे हैं !

यह हमला हमारी सभ्यता संस्कृति पर है
यह हमला हमारी बकाए-हस्ती पर है
यह हमला हमारे [illegible] पर है दोस्ती पर है
यह हमला हमारी बुलन्द मस्ती पर है

जो हमेशा दूसरों के इशारों पर चला करते हैं
सबको झूठ और फरेब से छला करते हैं
पीठ में छुरा घोंप कर भी रहते भोले के भोले
वे लोग अय्यूब की तरह हाथ मला करते हैं।

जङ्ग का अंजाम देखलो अब आंख खोलकर
मौका है सोचो अब भी कलेजा टटोल कर
ताकत मशीन की नहीं इन्सान की काम आती है
चैन से बैठोगे कैसे मजहबी विष घोलकर ?

वक्त है अब भी चेतो पागलपन छोड़ो
जङ्ग की भाषा में बातें करना छोड़ो
सूरत बेनकाब हो चुकी है जहां में
दुश्मन की तरह घातें लगाना छोड़ो।

चले जब हिन्द के हंटर, नेट !

जमनादास व्यास 'दर्द भारती'

कवि-परिचय

नाम : जमनादास व्यास 'दर्द भारती'

जन्म तिथि : श्रावण शुक्ला २ सं० १९९०

स्थायी पता : जोशीवाड़ा, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : स्फुट

प्रेरणा के स्रोत : आधुनिक हिन्दी काव्य

चलें जब हिन्द के हंटर, नेट
पिट गए पाक के सेबरजेट !

मची पिण्डी में खलबली
कि कैसी चाल ये चली
लाहौर हाथ से निकला
सोचा ले लेंगे दिल्ली !

सैकड़ों टैंक मटियामेट
पिट गए पाक के सेबरजेट !

छम्ब और जोरियां, असनूर
धर्का, स्यालकोट, कपूर
यहीं पर दुश्मन चूर-चूर
टूटा घमण्ड और गरूर !

बहुत से मर गए पायलेट
पिट गए पाक के सेबरजेट !

-● दो सौ आठ

फिरोजपुर, अंबाला, अमृतसर
जोधपुर, जालंधर, श्रीनगर,
बहुत बमबारी हुई इन पर
न मिटे न मिटेंगे ये शहर !

लगे राजू के निशाने रेट
पिट गए पाक के सेवरजेट !

न देंगे किसी भी कीमत पर
किसी को कश्मीर ये सुन्दर
सुनो भुट्टो, अय्यूब सदर !
कश्मीर हिन्द का है सर !

अब बोरिया-बिस्तर लो समेट
पिट गए पाक के सेवरजेट !

सीमा के सरदार !

मङ्गल सक्सेना

कवि-परिचय

नाम : मङ्गल सक्सेना
सचिव, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

जन्म तिथि : १४ मई १९३६

स्थायी पता : मङ्गल निवास, बड़े डाकखाने के पीछे, बीकानेर

वर्तमान पता : सचिव रा. सा. अ., उदयपुर

प्रकाशित साहित्य : देश प्रदेश के पत्रों में।
आकाशवाणी जयपुर केन्द्र से सम्बद्ध।
'मैं तुम्हारा स्वर' (काव्य) प्रेस में।

प्रेरणा के स्रोत : अन्तर्आत्मा के कृतिकार की बेचैनी,
सौन्दर्य पिपासा व
विराट सत्य की अनुभूति हेतु दाहक आग्रहशील आकुलता।

सीमा के सरदार
तुम्हारे पीछे हम तैयार
कपट का सीना फाड़ो रे !
शत्रु पर झपट दहाड़ो रे !
शान्ति की आन निभानी है !
सत्य की प्यास बुझानी है !

ये भारत ऐसा देश
युद्ध के सैनिक जैसा वेष
कण्ठ पञ्जाब, शीश कश्मीर, बाजु हम्मीर
पहाड़ों का सीना रणधीर
हिमालय तो भारत का शङ्ख
शत्रु के प्राण उड़ें निष्पङ्ख
फूंक से दिशा उघाड़ो रे !
साँप के दाँत उखाड़ो रे !

विजय की यही निशानी है
युद्ध की माँ क्षत्राणी है !
सीमा के सरदार !
तुम्हारे पीछे हम तैयार !

ये इतिहासों का लेख
विश्व हक्कावक्का है देख
पञ्चनद पञ्चधारी तलवार, अबुझ अङ्गार
वीरता हर सिर पर तैयार
मरण का पर्व मने जिस वर्ष
जिन्दगी का है दूना हर्ष
जोश गज-घोष, चिंघाड़ो रे !
शत्रु की धजा बिगाड़ो रे !

देश पर चढ़ी जवानी है
आंख में धधका पानी है !
सीमा के सरदार !
तुम्हारे पीछे हम तैयार !

ये संस्कृति का ध्वज-गान
गूंजता आदिदेव-अभिमान
हमारी आत्मा का आकाश, अमिट विश्वास
मनुजता का निःशेष निवास
सत्य का सूरज छाया करे
खेलों का खून जलाया करे
पूतना को फिर ताड़ो रे !
कंश का वंश उजाड़ो रे !

एकता अमर बनानी है, हिन्द की धरती दानी है !
सीमा के सरदार !
तुम्हारे पीछे हम तैयार !

ये शब्द ब्रह्म उद्घोष
चंद के छंदों में पुनिरोष
आज फिर पीथल करे पुकार, उठो हुंकार
निराला की मिट्टी परवार !
राम की शक्ति टूट कर पड़े
भारती खप्पर लेकर बढ़े
कलम के बजो नगाड़ों रे !
तिरङ्गा रिपु पर गाड़ो रे !

बीसवीं सदी न आनी है
नये को नीव भरानी है !
सीमा के सरदार ! तुम्हारे पीछे हम तैयार !
कपट का सीना फोड़ो रे !

ऊजळा आखर

मुरलीधर व्यास

कवि-परिचय

नांव : मुरलीधर व्यास 'विशारद'—(बाँठिया पुरस्कार विजेता)

जलम तिथि : चैत सुदी १२ वि. सं. १९५५

छप्योड़ो साहित्य : राजस्थानी कहावतां (२ भाग), दाढ़ी पर टैक्स (हास्य, हिन्दी), इक्के वालो (राजस्थानी हास्य—बम्बई मारवाड़ी सम्मेलन से सर्वश्रेष्ठ कृति के रूप में पुरस्कृत), जीवता जागता चितराम (राजस्थानी रेखाचित्र), उज्वल मणियां (राजस्थानी लोक कथावां), बरसगांठ (राजस्थानी कहानियां), राजस्थानी लोककथाएं (४ भाग, प्रेस में)।

प्रेरणा के स्रोत : महात्मा गांधी के 'यङ्ग इंडिया' अखबार पढ़ने से महापुरुषों के जीवन-चरित्र व महाभारत जैसे पुनीत धर्म-ग्रन्थ से मैं मूलतः प्रभावित रहा हूं। १९१६ में मेरी पहली कहानी 'गल्प माला' पत्रिका में 'मित्र' शीर्षक से छपी।

कायर मरणो खाट रो
धन मरणो रण खेत
बो मरणो सं सूं सिरे
जलम भोम रे हेत ।

'मुरळी' पग पोयण धरै,
सुमन फूलं भल रङ्ग
रङ्ग भारत राख्यो दुनी,
कर वैरी रङ्ग भङ्ग ।

साथियों ! बढ़े चलो

'सनम' मुल्तानवी

कवि-परिचय

नाम : केवल कृष्ण 'सनम' मुल्तानवी

जन्म तिथि : १८ अगस्त १९४१

स्थायी पता : १७, सादुलनगर कॉलोनी, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य . बीकानेर, दिल्ली और बम्बई की साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाओं मे कलाम छापा होता रहा है।

प्रेरणा के स्रोत : जिन्दगी का एहसास मेरी शायरी है।

तिरङ्गा हाथ में लिए, हथियार साथ में लिए;
साथियों ! बढ़े चलो, बढ़े चलो साथियों !

हैजान से तूफान का फ़लक पे इक सहाब उठा,
जङ्ग का रबाब् बजा, अजल का नकाब उठा,
बेदार अब अवाम हुआ, नया इन्कलाब उठा,

तावानी रूख पर लिए, रवानी चाल में लिए;
साथियों ! बढ़े चलो, बढ़े चलो साथियों !

ये वक्त की पुकार है सरहद पे हमलावार है,
वतन को तुम्हारे ख़ून की आज फिर दरकार है,
तुम्हारे इन बाजुओं में हिन्द की पतवार है,

वक्त की पुकार पर, दुश्मन की ललकार पर,
साथियो ! बढ़े चलो, बढ़े चलो साथियों !

वतन की आबरू रखो, वतन के वास्ते लड़ो,
अमन की जुस्तजू रखो, अमन के वास्ते लड़ो,
चमन की आरजू रखो, चमन के वास्ते लड़ो,

अम्ने-आलम के नाम पर, मन्जिले-मुकाम पर;
साथियों ! बढ़े चलो, बढ़े चलो साथियों !

दे चुके हैं हम बहुत उनको सबक सकून का
आज बदल जायेगा किस्सा तारीख के मजमून का,
खून से ही लेंगे हम आज बदला खून का,

मैदाने-जङ्ग की तरफ, तूफाने-जङ्ग की तरफ;
साथियों ! बढे चलो, बढे चलो साथियों !

आज दुनियां को दिखा दो, हिन्दुस्तान एक है,
हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, हर इन्सान एक है,
ऐलान करदो हिन्द का हर नौजवान एक है,

अभी चलो वहां चलो जैसे चले तूफां चलो,
साथियों बढे चलो बढे चलो साथियो !

खतरे के इस महौल में हिफाजत करनी है तुम्हें,
ठण्डे दिलों मे जोश की हरारत भरनी है तुम्हे,
गांधी, पटेल, सुभाष की इज्जत रखनी है तुम्हें,

अपना फर्ज मान कर, अपना सीना तान कर;
साथियों ! बढ़े चलो, बढ़े जलो साथियों !

हिंद के मुसलमानों से खिताब

दीन मोहम्मद 'मस्तान'

कवि-परिचय

नाम : दीन मोहम्मद 'मस्तान'

जन्म तिथि . सन् १९२३ ई.

स्थायी पता : मोहल्ला सिक्कान, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : 'कौम से शिकवा', 'मौसमे बरसात', 'रेल', 'रिश्वतेशाला', इशारा', 'शाने-गांधी', 'मातमे नेहरू', मुशाइरिया साहब का बरसी साल', 'इजहारे हकीकत', 'वतन की खोली', 'शहीदाने सहाद को सलाम', 'बोर्डर का सिपाही' 'आगे बढ़ो', 'हिंद के मुसलमानों से खिताब' नज्में लिखी हैं।

प्रेरणा के स्रोत : मेरे वालिदे मोहतरम् मुस्तरम की शायरी, शेख निसार अहमद निसार साहब से इस्ला, ठाकुर जसवन्त सिंह डी. ई. जी. पुलिस (राजस्थान) ने मुझे 'मुल्क-ओ-कौम' की भलाई के लिए कलम उठाने को प्रेरित किया। मैं उनका बड़ा शुक्रगुजार हूं। अर्ज है—

जेब खाली है हाथ रीते हैं
दोस्तों के करम पर जीते हैं
पास पैसे नहीं मगर 'मस्तान'
रोज मिलती है रोज पीते हैं

ऐ मुसलमां ! ऐ सरापा-पैकरे-सब्रो-रज़ा,
ऐ फ़िदाए-मुल्के-हिन्दुस्तान ऐ मर्दे-ख़ुदा,
तुझपे दुनियां में है अखलाकों-वफ़ा का ख़ातमा,
देख तो तेरे वतन पर वक़्त ये क्या आ पड़ा,

तूने क्या सीखा नहीं ये मज़हबे-इस्लाम से !
जानो-दिल से हो मोहब्बत भी वतन के नाम से !

दुश्मनाने-हिन्द की जोरों-जफ़ा पर गौर कर,
जो मुख़ालिफ़ हो रही है उस हवा पर गौर कर,
गौर कर हां, गौर कर अपनी वफ़ा पर गौर कर,
और इरशादे-मोहम्मद-मुस्तफ़ा पर गौर कर,

हुक्म ऐसा है कि गमख्वारे-वतन बन कर रहो !
ऐ मुसलमानों वफ़ादारे-वतन बनकर रहो !

मुल्क की ख़ातिर कज़ा आ जाए तो परवा न कर,
मौत है ऐसी रवां आ जाए तो परवा न कर,
पेश रिश्ता ख़ून का आ जाए तो परवा न कर,
रूबरू भाई सगा आ जाए तो परवा न कर,

मुल्क की ख़ातिर उदू-ए-मुल्क को ललकार दे !
बाप भी हो सामने तो बढ़ के गोली मार दे !

मुल्क की अजमत की खातिर तेज तूफ़ानों से लड़,
होके दीवाना वतन का लाख फरजानों से लड़,
आज अपनों के लिए लाजिम है बेगानों से लड़,
जो मुख़ालिफ़ है वतन के उन मुसलमानों से लड़,

बानि-ए-जुल्मों-सितम का रुख बदलना फ़र्ज है !
दुश्मने-अहले-वतन का सर कुचलना फ़र्ज है !

मुल्क की राहों में आतिश-बार अङ्गारों से खेल,
मौजे-दरिया से उलझ, तूफान के धारों से खेल,
सामना तोपों का कर, गोलों की रफ़्तारों से खेल,
जान की बाजी लगा, मैदां में तलवारों से खेल,

खूने-दिल कर पेश बुनियादे-चमन के वास्ते !
तेरा जीना और मरना है वतन के वास्ते !

ये तो माना तू अज़ल से सादे-कुल इकरार है,
मख़्ज़ने-महरो-वफ़ा है, साहबे-ईसार है,
नेक है, बेबाक है, जां बाज है, दीदार है,
गर नहीं हुब्बे-वतन दिल मे तो सब बेकार है,

तुझको गर उल्फ़त नहीं है आज हिन्दुस्तान से !
नामुकम्मल है तेरा ईमान भी ईमान से !

देख तो अयूब ने मन्ज़र ये क्या दिखला दिये,
तेरे हिन्दुस्तान को क्या-क्या अलम पहुँचा दिये,
तोड़ डाली अस्पतालें उसने गिरजे ढा दिये,
गुरुद्वारों, मस्जिदो-मन्दर पे बम बरसा दिये,

अब कहां काइल रहा वो खालिकों-महबूब का !
चीन का मजहब है जो, मजहब है वो अयूब का !

दौलते-ईमां में शामिल हिन्द की तौकीर कर,
मुल्क की अज़मत बढ़े, ऐसी कोई तदबीर कर,
दूर जो कब्जे से है, कब्जे में वो जागीर कर,
पीमये-पुरजोश सैरे-गुलशने-कश्मीर कर,

उठ कुछ ऐसा जोश लेकर हिम्मते-बेबाक में !
पाक के नापाक इरादों को मिलादे खाक में !

तू दिलो-जाँ से अगर शैदा है हिन्दुस्तान का,
जोड़ दे रिश्ता दिले-इन्सान से इन्सान का,
साफ दिल से बन मुहाफ़िज धर्म का ईमान का,
और सुना दे खल्क को पैगाम ये 'मस्तान' का,

हिन्द के हिन्दू-मुसलमां की कहानी एक है !
इसकी मुश्किल में हर एक हिन्दोस्तानी एक है !

मैदाने-जंग

अज़ मुन्शी ख़लीक़ अहमद 'ख़लीक़'

कवि-परिचय

नाम : अज़ मुन्शी ख़लीक़ अहमद 'ख़लीक़'

स्थाई पता : धोबी तलाई, बीकानेर

जन्म तिथि : अप्रेल १९१९

प्रकाशित साहित्य : फुटकर गज़लें व नज़्में।

प्रेरणा के स्रोत : कुदरतन

जिक्र जुल्फों का है इसमें ना गरेबान का है
आज अफ़साना किसी और ही उन्वान का है
फ़र्ज़ हिन्दू का यही फ़र्ज़ मुसल्मान का है
सब बलिदान करें वक्त बलिदान का है

अज़मते हिन्द पे सब जान को कुर्बां कर दो
मादरे गेती की जितनी हो मुरादें भर दो

सुन ज़रा गौर से सुन यह है सिपाही का पयाम
जङ्ग ही अस्ल मे है मर्दे मुजाहिद का मुकाम
नज़्र करता हूं मएहुब्बे वतन का इक जाम
मुस्करा कर इसे पीले तेरी हिम्मत को सलाम

आज़मायश है तेरी मारना मरना है तुझे
फिर बलिदान की राहों से गुज़रना है तुझे

आ पड़ा हिन्द पे है हिन्द की अज़मत का सवाल
आफ़तों से तुझे टकराना है ऐ हिन्द के लाल
बांध ले सर पे कफ़न हाथ में हथयार संभाल
तेरी हिम्मत ही पे है मुल्क का सारा इक़बाल

मुल्क और क़ौम की क़ुव्वत है सिपाही है तू
तुझसे है शाने वतन अज़मते शाही है तू

आतशे जंग की बरसात में चलना है तुझे
पैर कर खून के दरया से निकलना है तुझे
क्या खबर कितने इरादों को बदलना है तुझे
हां अभी और अभी और संभलना है तुझे

तंग मैदान है बिफरे हुए शेरों के लिए
जान पर खेलना है खेल दिलेरों के लिए

आतशे जोश की भट्टी में पिघलते जाओ
मर्द हो हिम्मते मर्दाना में ढलते जाओ
मिस्ल परवाना हर इक गाम पे जलते जाओ
तीर की तरह सफों में से निकलते जाओ

कोई टकराता नहीं अज्म की दीवारों से
आफ़तें डरती हैं खुद हौसला बरदारों से

सामने दश्त हो या कोह या दरया आए
गोल्यां बरसें के बम सर पे कहीं बल खाए
टेंक आ जाए के तैयार कहीं लहराए
फर्ज़ हिन्दी का यही है के वोह टकरा जाए

जंग की आग में ईंधन की तरह कूद पड़ो
ऐ-दिलेराने वतन इस तरह बढ़चढ़ के लड़ो

हां परे बांध के बढ़ते रहो एजाज़ के साथ
बाज़ुयां सर की लगादो दिलें जां बाज़ के साथ
जो भी हमला हो जिधर हो नए अंदाज़ के साथ
बर्क की तरह गिरो टूट के आवाज़ के साथ

एक ही वार में मेंदा का सफाया करदो
जग की जितनी हो हंस-हंस के मुरादें भरदो

अज्मो हिम्मत से बड़ा कोई नहीं है हथ्यार
लाख हमलो से खतरनाक है इक धाक का वार
मर्द के वास्ते मेराज है तलवार की धार
·मौत की गोद मे बढ़ता है सिपाही का खार

मर्द है मर्द सिपाही है सिपाही है तू
जंग का रहनुमा जंग का राही है तू

तोप बन्दूक खिलौना है सिपाही के लिए
कोह हम्वार है इस दश्त के राही के लिए
हौसला चाहिए मर्दों की गवाही के लिए
इक यही साज़ है दुश्मन की तबाही के लिए

मर्दे बेबाक तरा हौसला बेबाक रहे
तू सलामत रह दुश्मन पे तेरी धाक रहे

● दो सो इकतीस

दामने गंग में बहते हुए पानी की क़सम
अज़मते हिन्द की आज़ाद कहानी की क़सम
इस तिरंगे की पुरा वक़्त निशानी की क़सम
ऐ जवानाने वतन तुमको जवानी की क़सम

जंग में खून का तूफ़ान उठा कर आना
हिन्द की नाव किनारे से लगा कर आना

पुराने शब्द : नये अर्थ

अक्षय चन्द्र शर्मा

कवि-परिचय

नाम : अक्षय चन्द्र शर्मा

जन्म तिथि : वैशाख शुक्ला ३ स० १९७४

स्थाई पता : सादुल कॉलोनी, बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशित साहित्य : (अ) रामस्नेही संप्रदाय [साहित्य व समीक्षा]

(आ) निबन्ध विहार

(इ) संचिता

(ई) राजस्थानी साहित्य व संस्कृति पर अनेक पत्रिकाओं में शोध-निबन्ध।

प्रेरणा के स्रोत : उपेक्षित व्यक्ति, विषय और ग्रंथ।

गाण्डीव को उठा कर
पार्थ-सा मेरा राष्ट्र
जिस क्षण खड़ा हुआ
विगत ज्वर भाव से,
गीता के सभी अर्थ—
भाष्यों के
आवर्तों गर्तों में
तैरते, भटकते
अभ चूभ करते
तट पर आ खड़े हुए
आश्वस्त भाव से।
आग मे नहाकर
धूम से सुवासित
रक्त चन्दन से लिप्त
मेरा राष्ट्र
सदियों बाद
गौरव सिंहासन पर
आज आरूढ़ है।
दुश्मन की
तोपों को तोड़ते
टैंकों से टकराते
सेबरजैटों को गिराते
जवानों ने हिम्मत ने
बुलन्दी ने
खौलते खून ने
नये अर्थ
लिख दिये है—

● बी सी पंतोस

बुद्ध की अहिंसा के
गांधी के सत्य के
नेहरू पञ्चशील के।
शान्ति के कबूतर की
मुरझाई झुलसी पांख
आज अनल पंछी बन
—गरुड़ बन—
उड्डयन करने को
आतुर है—गहन गगन
पथ में।
युगों की
तमिस्रा के
कारा के
माया के
सभी पट खुल गए।
मुक्त है मेरा राष्ट्र
शुद्ध-बुद्ध जाग्रत् है।
आत्म जयी
मृत्यु जयी
विजयी रथारूढ़—
कीर्ति श्री
विभूति
वरने को
प्रतीक्षातुर।

जवानों की पुकार

गङ्गादास 'गङ्ग'

कवि-परिचय

नाम : गङ्गादास 'गङ्ग'

जन्म तिथि : १ जून १९४८

स्थाई पता : रत्तानी बोथरों की गुवाड़, रांगड़ी चौक, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : स्फुट

प्रेरणा के स्रोत : काव्य पठन एवं अनुभव।

खून का बदला खून से लगे,
यही हमारा नारा है।
सीमा पर लहराए तिरङ्गा,
जो जन-जन का प्यारा है॥

वीर प्रसविनी यह धरती है,
इसका ऊंचा जग मे ताज।
भले बहे लोहू की नदियां,
रखने को भारत की लाज॥

चमक रही है ये सङ्गीनें,
आज सभी वीरों के कर में।
रण में जाने को तत्पर हैं,
योद्धा भारत के घर-घर में॥

आज प्रतिज्ञा हम करते हैं,
अंतिम दम तक बदला लेंगे।
कसम हमें वीरों की, सुनलो,
शीत धाम सब हम झेलेंगे॥

जागा जोश जवानी जागी,
अब हम देंगे शत्रु हिला।
तृप्त करेंगे रणचण्डी को,
हम रिपुओं का खून पिला॥

मां की लाज बचाने को,
यह जीवन अर्पित सारा है।
खून का बदला खून से लेंगे,
यही हमारा नारा है॥

ललकारें सुन कर दुश्मन की
भारत का हर कोना जागा।
भारतीय शेरों के आगे,
नहीं टिकेगा शत्रु अभागा ॥

सीमाओं पर खड़े प्रहरियों !
बढ़ो दुश्मनों की छाती पर।
हमें गर्व है राष्ट्र-धर्म इतिहास,
और अपनी धरती पर ॥

जब तक बूंद रक्त की होगी,
तब तक हम झेलेंगे गोली।
आज सभी मिलकर सीमा पर,
खेलेंगे दुश्मन से होली ॥

जब तक है गङ्गा में पानी,
ब्रह्मपुत्र में भरा उफान।
तब तक पीछे नहीं हटेंगे,
यह 'प्रताप' 'दुर्गा' की आन ॥

सीमाओं पर आज सनातन,
पौरुष फिर हुंकारा है।
खून का बदला खून से लेंगे,
यही हमारा नारा है ॥

मिल जाएगा उत्तर महज कश्मीर से !

अरुण सक्सेना 'सुमन'

कवि-परिचय

नाम : अरुण सक्सेना 'सुमन'

जन्म तिथि : २६ अगस्त १९४४

स्थाई पता : एजूकेशनल प्रेस, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : स्फुट लेख, कविताएं, गद्य-गीत आदि
(विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में)

प्रेरणा के स्रोत : साहित्य-पठन ।

तुम्हें मिल जाएगा उत्तर
महज कश्मीर से—

मत बढ़ो इस ओर
यह है देश वीर प्रताप का !

घर-घर हैं यहां राम
भामाशाह, दुर्गा
औ' हर युवा संग्राम सिंह !

पद्मिनी ने यहीं जौहर किया है
और लक्ष्मी ने यहीं
दुश्मन को काटा है !

यम यहीं हारा
यह देश भामाशाह का प्यारा !

त्याग घर-घर में यहां
कुर्बानियां हर वीर बालक में
फिर भला हस्ती तुम्हारी क्या
जो यों हमें ललकार कर आओ ?

● बी सी हेमालीय

मत कदम करना इधर
देख कितने है खड़े कीलर

जान लेकर के हथेली पर
बढ़ रहे हैं बेरोक दुश्मन पर
अब्दुल हमीद-से वीर बबर
पेटन और सेबर पर
ऊंचा हौसला रख कर !

है यही बेहतर
बिलों में ही रहो घुसकर
नहीं तो मिल जाएगा उत्तर
महज कश्मीर से !

मातभोम रो हेलो !

जयकृष्ण व्यास 'निर्मोही'

कवि-परिचय

नाम : जयकृष्ण व्यास 'निर्मोही'

जन्म तिथि : २ फरवरी १९३४

स्थायी पता : कृष्ण-निवास, सूरसागर, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : अनेक कहानियां, कविताएं व लेख
(पत्र-पत्रिकाओं में)

प्रेरणा के स्रोत : राजस्थानी भाषा व साहित्य का अन्तःअनुराग
ही मेरी मूल प्रेरणा है।

हेलो मारं रे, मायड़ रो चूंग्यो दूध
हेलो मारं रे।

सिसक्यां सा'रं बा जामण जिणरा थे पूत,
सिसक्यां सा'रं रे।

कसमीरी सींवा डाकण नै,
चोरां ज्यूं घरि लुकतो मायो।

भारत री मोम उजाळी नं,
रगतां स्यूं लाल करण घायो।

हुड़को मारं थं मादड़ रा भेग्या दूत,
हुड़को मारं रे।

दूसरा उण घरती नं मेटण,
जकी आपणी मां कल्याणी।

● दी सी सैनामोह

'सत्यमेव जयते' वाळी भू,
गौतम गांधी रो सैनाणी ।

ओ ललकारै रे, परताप सिवा रो खून,
ओ ललकारै रे ।

देस्यां मेट जात दुसमण री,
कणो ओ, हाथा ले पाणी ।

परे वगा देस्यां फळसे स्यूं,
म्हे पूरा सिमरथ सैनाणी ।
म्है सै सागै रे, दुसमण रो वाळा बूंठ ।

हेलो मारै रे, मायड़ रो चूंग्यो दूध,
हेलो मारै रे ।

मादरे हिंद परेशां न हो रंजूर न हो !

मोहम्मद उस्मान 'आरिफ' नक्शबंदी, एडवोकेट

कवि-परिचय

नाम : मोहम्मद उस्मान 'आरिफ'

प्रकाशित साहित्य : स्फुट रचनाएं।

प्रेरणा के स्रोत : कुंवरतन

(१)

तेरी नामूस के अज़मत के निगहवान है हम
तेरी तहज़ीब पे तारीख़ पे कुर्बान है हम
सर हथेली पे तो हाथों में लिए जान हैं हम
तेरे फर्जन्द हैं हिन्दु के मुसलमान है हम
मादरे हिन्द परेशां न हो रंजूर न हो !

(२)

बंदेए मेहरो वफा मुनिस गमख्वार हैं हम
तेरे आइने मोहब्बत के परस्तार हैं हम
नर्म दिल ही सही लेकिन वो जिगरदार हैं हम
वक्त पड़ जाने पे खीचती हुई तलवार हैं हम
मादरे हिंद परेशां न हो रंजूर न हो !

(३)

पूछ कर आयेंगे हमसे यहां आने वाले
और हैं रन में जो हैं पीठ दिखाने वाले
क्या डराते हैं हमें आज डराने वाले
हम हैं जां बाज लहू में है नहाने वाले
मादरे हिन्द परेशां न हो रंजूर न हो !

(४)

इन रगों में अभी गैरत का लहू जारी है
इतनी ताकत है शुजाअत है जिगरदारी है
सैकड़ों पर तेरा एक-एक जवां भारी है
हम से टकराया है जो उसके लिए ख्वारी है
मादरे हिन्द परेशां न हो रंजूर न हो !

(५)

गैर मुमकिन है यह मस्जिद ये शिवाले न रहें
जुल्मतें घेरलें और मन के उजाले न रहें
हम मोहब्बत की अमानत को संभाले न रहें
जात उसकी रहे और पूजने वाले न रहें

मादरे हिन्द परेशां न हो रंजूर न हो !

(६)

लफ्ज जुड़ते हैं तो तहरीर हुआ करती हैं
कड़िया मिलती हैं तो जञ्जीर बना करती है
नक्श बाहम हों तो तस्वीर खिंचा करती हैं
मुल्क की बस यों हो तामीर उठा करती हैं

मादरे हिन्द परेशां न हो रंजूर न हो !

(७)

राह अब इस तरह काटेंगे तेरे लख्ते जिगर
एक दिल एक जबां एक खयाल एक नजर
रास्ते मुख्तलिफ होंगे न जुदा होगी डगर
मिलके मञ्जिल पे पहुँच जायेंगे बेखौफो-खतर

मादरे हिन्द परेशां न हो रंजूर न हो !

(८)

सच्चा आदर्श ही हथियार तेरा बन जायेगा
जुल्म का सर तेरे कदमों में चला आयेगा
आस्मा तेरी बलंदी की कसम खायेगा
ये तिरङ्गा यूँ ही लहराएगा इतरायेगा

मादरे हिन्द परेशां न हो रंजूर न हो !

अहदे-मोहकम

मोहम्मद इब्राहीम 'गाजी'

कवि-परिचय

नाम : मोहम्मद इब्राहीम 'गाज़ी'

जन्म तिथि : १८ दिसम्बर १९१८

स्थायी पता : मोहल्ला कुरैशियान, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : बहुत से रिसालों में कलाम अक्सर छपता रहता है। रेडियो से भी कलाम नश्र होता रहा है।

प्रेरणा के स्रोत : मेरी नज़्में आम तौर पर हकीकत की अक्कासी करती हैं।

तू राहते-कल्बो-जां, तू आंख का तारा है,
हर जर्रा तेरा हमको जी-जान से प्यारा है,
बदख्वाह जो तेरा है, दुश्मन वो हमारा है,
जो तुझसे उलझता है हम उसको मिटा देंगे !
ऐ हिन्द ! तेरे खातिर हम जान लड़ा देंगे !

सिख है कि वो ईसाई, हिन्दू कि मुसलमां है,
सबसे तेरा रिश्ता है, तू सब की रगे-जां है,
गर तू ही प्रेशां है, हर एक प्रेशां है,
आपस के गिले-शिकवे हम दिल से भुला देंगे !
ऐ हिन्द तेरे खातिर हम जान लड़ा देंगे !

ग़ाफ़िल न समझ लेना बेदार हैं हम हर दम,
रक्षा के लिए तेरी, तैयार हैं हम हर दम,
हर चाल से दुश्मन की होशियार हैं हम हर दम,
मक्कारों के मनसूबे मिट्टी में मिला देंगे !
ऐ हिन्द ! तेरी खातिर हम जान लड़ा देंगे !

ललकारा हमें किसने, ये किसने पुकारा है,
भड़का हुआ सीनों में गैरत का शरारा है,
बा-बांगें-दोहल कह दो कश्मीर हमारा है,
इस सिम्त जो आएगा तोपों से उड़ा देंगे !
ऐ हिन्द ! तेरी खातिर हम जान लड़ा देंगे !

जो काम भी करना है, करना है तेरी खातिर,
है सुलह तेरी खातिर, लड़ना है तेरी खातिर,
जीना है तेरी खातिर, मरना है तेरी खातिर,
गर वक्त पड़ा तुझ पर ये करके दिखा देंगे !
ऐ हिन्द ! तेरी खातिर हम जान लड़ा देंगे !

मरने मे हजारों के फँस कर भी नहीं डरते,
हम रन में गरजते है हम आह नहीं भरते,
जो आन पे मरते हैं, मर कर भी नहीं मरते,
ये बात जमाने को करके बता देंगे !
ऐ हिन्द ! तेरी खातिर हम जान लड़ा देंगे !

सौ बार तेरी खातिर दुख दर्द भी झेले हैं,
ऐसा भी हुआ अक्सर हम मौत से खेले हैं,
क्या फ़िक्र जो सरहद पर झगड़े हैं झमेले हैं,
मैदान में लाशों के अम्बार लगा देंगे !
ऐ हिन्द ! तेरी खातिर हम जान लड़ा देंगे !

माना कि जमाने मे हम अमन के हामी हैं,
नफरत है लड़ाई से हम प्रेम पयामी है,
ऐसा तो नहीं लेकिन शैदा-ए-गुलामी है,
आजादी पे हम अपना सबकुछ ही लुटा देंगे !
ऐ हिन्द ! तेरी खातिर हम जान लडा देंगे !

जिस बन मे फिरे लक्ष्मन उस दश्त के राही हैं,
हम भीम को धरती के जां-बाज सिपाही हैं,
जालिम के लिए 'गाजी' तूफाने-तबाही है,
हर कसरे-सितमगर को बुनियाद हिला देंगे !
ऐ हिन्द ! तेरी खातिर हम जान लड़ा देंगे !

नेकी का है सर चश्मा कुरां है कि गीता है,
इक नूर का दरिया है, इक सत्य सरिता है,
मकसद जो हमारा है इक प्रेम कविता है,
अज़्मत का तेरी सिक्का दुनिया पे बिठा देंगे !
ऐ हिन्द ! तेरी खातिर हम जान लड़ा देंगे !

आखिर जीत हमारी है !

मोहम्मद उस्मान 'कादरी'

कवि-परिचय

नाम : मोहम्मद उस्मान 'कादरी'

जन्म तिथि : १७ अप्रेल १९३२

स्थायी पता : शकील मंजिल, चूनगरान, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : बूट पालिश, चीनी चूहे

प्रेरणा के स्रोत : चलचित्र

पाक तेरे नापाक इरादे खूब समझते भारतवासी
कौम बहादुर इस धरती की, चेहरे रोशन नही उदासी
काश्मीर पर कदम बढ़ा मत वरना चोट करारी है
चाहे जितना इतराले तूं आखिर जीत हमारी है

वतन के खातिर हम सब सुन ले, अपना लहू बहा देंगे
हिन्दू-मुस्लिम एक, हिन्द की ताकत जनूं दिखा देंगे
दुश्मन संभल समझले हम से टक्कर लेनी भारी है
चाहे जितना इतराले तूं, आखिर जीत हमारी है

नहीं झुके हैं नहीं झुकेंगे, ओ अयूब तेरे आगे
नहीं रुके हैं नहीं रुकेंगे, देश दिवाने हम जागे
जो जो भी टकराया हम से, उसकी हिम्मत हारी है
चाहे जितना इतराले तूं, आखिर जीत हमारी है

● बी सी कुमावत

अरे शर्म ना आई तुझको जङ्ग मचाते भाई पर
मस्जिद पर गोले बरसाते नजर न गई खुदाई पर
काश्मीर की जमीं हमारी हमें प्राण से प्यारी है
चाहे जितना इतराले तूं, आखिर जीत हमारी है

जाग ऐ हिन्दोस्तां !

अन्सार अहमद अब्बासी 'महशर'

कवि-परिचय

नाम : अन्सार अहमद अब्बासी 'महशर',

जन्म तिथि : अक्टूबर १९२५

स्थायी पता : मोहल्ला व्यापारियान, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : 'निशाने राह', आकाशवाणी जयपुर केन्द्र से सम्बद्ध।

प्रेरणा के स्रोत : मेरी शायरी का महवर है—

गमें-दौरां, गमें-जानां मत पूछ;
दिल की हर रग में वही दर्द बसा आज भी है!

ले रहा है वक्त शायद फिर से तेरा इम्तिहाँ,
बन रही है वादी-ए-कश्मीर फिर आतिश-फिशाँ,
उठ रही है तेरी जानिब पस्त फ़ितरत आन्धियाँ,

हाय ! ये गफ़लत हमारी, उफरी ये ख्वाबे-गिरां !
जाग ए हिन्दोस्तां अब जाग ऐ हिन्दोस्तां !!

खारो-गुल खतरे में है, ये गुलसिताँ खतरे में है,
ये जमीं खतरे मे है, ये आसमाँ खतरे में है,
वादी-ए-कश्मीर क्या हिन्दोस्ताँ खतरे में है,

जानिबे-दुश्मन बढ़ा चल कारवाँ-दर-कारवाँ !!
जाग ऐ हिन्दोस्तां अब जाग ऐ हिन्दोस्तां !!

जङ्ग ने बढ़कर उलट दी है बिसाते-अन्जुमन,
खाको खूं में मिल रहे हैं आज तेरे फ़ितरो-फन,
सी रहा है आदमी फिर आदमियत का कफ़न,

वक्त फिर दोहरा रहा है दास्ताने-खूं चुका !
जाग ऐ हिन्दोस्तां अब जाग ऐ हिन्दोस्तां !!

अहदे हाजिर की फ़जाए, आज के आदाब देख,
बम्ब बरसते देख हरसू आतिशी सैलाब देख,
वादी-ए-कश्मीर चल और जानिबे-पञ्जाब देख,

वहशते-रक्शा है हरसू अब कहाँ अम्नो-अमां !
जाग ऐ हिन्दोस्तां अब जाग ऐ हिन्दोस्तां !!

• बी डी तिरैख

फँस गई है कश्ती-ए-अम्नों-अमां तूफान में,
देख वो शोले भड़क उठे हैं राजस्थान में,
आ के दे दादे-सुजाअत अब तो तू मैदान में,
आज फिर मन्जूर है दुनियां को तेरा इम्तिहां !
जाग ऐ हिन्दोस्तां अब जाग ऐ हिन्दोस्तां !!

रेत की दीवार एक हाइल है तेरे सामने,
आज जो अन्देशा-ए-बातिल है तेरे सामने,
अज्म मोहकम है तेरा मन्जिल है तेरे सामने,
'पाक' के दावे-ए-बातिल की उड़ा दे धज्जियां !
जाग ऐ हिन्दोस्तां अब जाग ऐ हिन्दोस्तां !!

ललकार

कलीमउद्दीन 'तजल्ली' उस्मानी

कवि-परिचय

नाम : कमीमउद्दीन 'तजल्ली' उस्मानी

जन्म तिथि : १७ दिसम्बर १९३५

स्थायी पता : हनुमानहत्था, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : देश-प्रदेश की पत्र-पत्रिकाओं में गीत,लेख,नाटक व स्फुट रचनायें।
आकाशवाणी जयपुर से सम्बद्ध।

प्रेरणा के स्रोत : काजी अमीनउद्दीन की खालिदाना विरासत।

ऐ जमीने-पाक यानि खित्ता-ए-आतिश-फ़िशां,
तू के है टूटा हुआ इक पारा-ए-हिन्दोस्तां,
जब से लेकिन हो गया तू दुश्मने-अम्नो-अमां,
सीना-ए-जमहूर पर है आमरीयत का निशां,

बेनुल अकवामी अदालत के अरे मुजरिम न भूल !
वादी ए कश्मीर मे तख्रीबकारी है फ़िज़ूल !!

है अमल तेरा ही जब तरदीद तेरे कौल की,
किस तरह से हम करें फिर एतबारे-दोस्ती,
रोशनाई एक समझौते की सूखी तक न थी,
दूसरी जानिब शुरू करदी है तूने सरकशी,

टुकड़े-टुकड़े कर दिये है तूने यूं कानून के !
तेरे दामन पर नजर आते है छींटे खून के !!

जानते हैं हम तेरे दिल में है कैसा इसतराब,
हो नहीं सकता मगर शर्मिन्दा-ए-ताबीर स्वाब,
हम खताऐ माफ तेरी कर चुके हैं बेहिसाब,
अब तो लेकिन ईट का पत्थर से देना है जवाब,

नफ़रतों के दरमियां गोन्धा गया था जो खमीर !
कुन्द आखिर आज उसने कर दिया तेरा ज़मीर !!

सुलह के पैगाम तेरे हैं फ़रेबे-पुरख़तर,
पासे-वादा को भी है दरकार लोहे का जिगर,
रहज़नों से मिल के तू क्या बन सकेगा राहबर,
तू के हाथों गैर के अपनी खुदी को बेचकर,

उंगलियों पर नाचने के वास्ते मजबूर है !
अम्ने-आलम के लिए रिस्ता हुआ नासूर है !!

चाऊ की चौखट पे ये तेरे सजदों की नमूद,
कर न दे पामाल अहसासे-शराफ़त की हदूद,
तोड़ डाले फिर उसूले-आदमियत के कयूद,
एशिया के वास्ते ख़तरा बना तेरा वजूद,

दोस्तों ने दुश्मनी के ढंग सिखलाये तुझे !
दर्दमन्दी मे तरीके-जङ्ग सिखलाये तुझे !!

आज शिवाजी के इस्तकलालो-हिम्मत की कसम,
अज्मे-टीपू कुव्वते-अर्जुन का रखेंगे भरम,
सर तो कट सकता है लेकिन हो नहीं सकता है खम,
बढ़ने पाये फिर न तेरे सरहदों पर कुछ कदम,

आ गये तो मौत के मुंह से निकल सकते नहीं !
मोम के पुतले कभी शोलों पे चल सकते नहीं !!

याद ताज़ा यूँ करें ब्रिगेडियर-उसमान की,
जिसने नामूसे-वतन पर ज़िन्दगी कुरबान की,
उस तरह से हम लगा देंगे जो बाजी जान की,
बढ़ न पायेंगी न मौजें फिर किसी तूफ़ान की,

रुख बदल डालेंगे फिर से गर्दिशे-तकदीर के !
हैं अभी जिन्दा मुहाफ़िज वादी-ए-कश्मीर के !!

वतन के सिपाही से खिताब

हाफ़िज़ गुलाम रसूल 'शाद' जामी

कवि-परिचय

नाम : हाफिज गुलाम रसूल 'शाद' जामी

संचालक—मदरसा जामिया, बीकानेर

प्रकाशित साहित्य : स्फुट उर्दू की गजलें व नज्में।

प्रेरणा के स्रोत : उस्ताद श्री जाम साहब टोंकी से अभिप्रेरित।

ऐ वतन के पासबां, ऐ मालिके फतहो जफ़र।
ऐ के तेरे नाम से फौजें हुई जेरो जबर॥
तेरी हिम्मत ने कुचल कर रख दिया दुश्मन का सर।
जङ्ग में हर मोर्चे पर तू रहा सीना सिपर॥

वीरता तेरी जहां मे आशकारा हो गई।
कुव्वते फौजे मुखालिफ पारा-पारा हो गई॥

बाल-बच्चों से वतन के वास्ते मुह मोड कर;
एक मालिक के भरोसे सारे घर को छोड़ कर।
रिश्तेदारों से भी अपना रिश्ता-नाता तोड कर,
रन की खातिर चल दिया कन्धे से कन्धा जोड़कर।

अब किसी का रज है दिल मे न कोई है मलाल;
है तेरे दिल में फकत अपने वतन ही का ख्याल।

हरफ तेरे हिन्द की तारीख पर आने न पाये;
तेरी सरहद पर कदम अपना कोई लाने न पाये।
हां, दिखा हिम्मत के दुश्मन अब कही जाने न पाये;
और कोई कश्मीर पर झण्डे को लहराने न पाये।

ऐ बहादर लश्करे दुश्मन के मुंह को तोड़दे;
चीन-ओ-पाकिस्तान के हर मोर्चे को तोडदे।

वादाए हुब्बे वतन पीके तू कर दुश्मन पे वार;
सामने फौजें मुखालिफ को तू करदे तार-तार।
तेरा लड़ना काम है, हटना नहीं तेरा शआर;
है तेरे अज्मे जवां से देश का ऊंचा वकार।

तू मुहाफिज हिन्द का तू कौम की तकदीर है;
तू वतन की आबरू तू वारीसे कश्मीर है।

तेरी हिम्मत दुश्मनों के वार पर हो खन्दा ज़न;
गोलियां खाकर भी माथे पर न आने दे शिकन।
मादरे गेती पे मर मिटना हो इक तेरी लगन;
शौक़ से कुरबान करदे देश पर तू जानो-तन।

जो वतन के वास्ते मरने से भी डरता नहीं;
मौत उसको ज़िन्दगी है वोह कभी मरता नहीं।

वीरता हिन्दुस्तां की तू मना कर छोड़ना;
जारहियत पाक की सबको दिखा कर छोड़ना।
अपनी सरहद से मुखालीफ़ को हटाकर छोड़ना;
खिरमने दुश्मन पे तू बिजली गिरा कर छोड़ना।

तेरे डर से मोर्चों को छोड़ कर जाने लगें;
वार से ऐ वाने पाकिस्तान थर्राने लगे।

वादिये कश्मीर पर झण्डे को तू लहराएजा;
आसमां से आग के शोलों को तू बरसाएजा।
नारा-ए-जयहिन्द से हर दिल को गरमाएजा;
मौत भी आए तो हंस कर उससे तू टकराएजा।

सर से कर तकमील आज़ादी के हर मज़मून की;
है कसम तुझको शहीदाने वतन के खून की।

इतिहास सुणावै है थानै !

विश्वनाथ 'विद्यार्थी'

कवि-परिचय

नाम : विश्वनाथ 'विद्यार्थी'

स्थाई पता : विवेक कुटीर, सुजानगढ़

प्रकाशित साहित्य : स्फुट

प्रेरणा के स्रोत : वह सब जो जब-तब मेरे मानस को झकझोर देता है।

(अ)

इतिहास सुणावे है थानें
थे सुण लीज्यो अब कान खोल
धरती स्यूं मेटो दुसमण नैं
धड़ जुवों जमानु जुवा बोल
बैरी रा रेग्या धर्‌या कोल
ऐ! ताना कुण देवे म्हानैं

(आ)

दुसमण आखर दुसमण रेसी
बैर वदी स्यूं करै जोर
स्यांपां नें अमरत पायां स्यूं
वढ़े जहर कर जोर ओर
अब मेटो आंनें धुवांधोर
ऐ! कांटा उलै चुबवानें

(इ)

ध्यावस करतां जुग हार्‌या
मीनख जमारो राख पांण
पण ऐ पापी तो रिया इस्या
मिटी न आंकी कसर कांण
छेक नाक की ठेठ अणी
ऐ! वार्तां कुण कैवे म्हानैं

(ई)

सो समझ बापड़ी गई धाप
कैवण रो मोको नहीं आज
करणें री वेळा कै थानें
करणु है सो करो आज
जद याद रैवेली ही आंनें

(उ)

बगत सीख दैवं साची
गयां पछै पछतावोला
अै ! मौका अब नै आणै का
थे बैठ्या बात बणावोला
चेतो करल्यो उठो जुवानो
सौगन देवै है थांनै

(ऊ)

बदा की बोट बोल उठी—
जौहर री कांणी भभक रही
गुरु गोविन्द रा नाना टाबर
हिवड़ै मे बोली धड़क रही
लोही रो तरपण कंवे है
ऐ ! खून कर्‌या कुण है क्यानै

(ए)

हर्‌या घाव से चेतक का
राणा झाला की हूस होस
प्याला सो आंख्यां पिरथी री
भरी जवानी अजब जोस
जद काढ़ सलाका स्यूं आंनै
गोरी कं कंवै है थानै

(ऐ)

सोमनाथ रा कोकरिया
मथुरा रै मन्दिर की झांकी
हल्दी घाटी रा रावळिया
क्यांकी दैवं ऐ साखी
अकबर गोरी तमर गजब
चंगेज घाव गहरा सोनै

तुमसे एक निवेदन मेरा

सरल

कवि-परिचय

नाम : सरल

जन्म तिथि : शरद पूर्णिमा, १९३८ (१० अक्टूबर १९३८)

प्रकाशित साहित्य : हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाओं में गीत, कविताएं प्रकाशित होती रहती हैं।

प्रेरणा के स्रोत : जीवन-संघर्ष

सीमा पर तैनात सिपाही
तुम से एक निवेदन मेरा;
घर-आंगन की याद सताए
तो बंदूक उठा लेना !

हसती लहलहाती फसलें ये
पनघट जाती मर्यादाएं;
पुस्तक पढ़ता कल का भारत
बिना थके चलती कल मोलें ।

नजर बुरी इस फुलवारी पर डाले कोई
तो बन्दूक दाग देना तुम ।
सीमा पर तैनात सिपाही……!

घर-आंगन में रहने वालों
तुम से एक निवेदन मेरा
जब आवाज लगाए धरती
सब कुछ न्योछावर कर देना ।

लड़ते हुए हमारे सैनिक
फौलाद ढालती फैक्टरियां
सपन देखता कल का भारत
थके, मिटे न इसका साहस

इतनी चिन्ता तुम कर लेना !
घर आंगन में रहने वालो……!

मेरी धरती के नेताओं !
तुम से एक निवेदन मेरा;
जहां तिरङ्गा फहर चुका है
वो धरती मत लौटा देना।
पीछे एक इन्च मत हटना।

खेत रह गये जवां खून की,
सूनी कोख, उजड़े सिंदूर की
बूंद-बूंद उमड़े सागर की
कीमत यदि चुकाने कोई—
समझौते की बात करे—
तो सीधे मुंह तुम बात न करना
सीमा पर तैनात सिपाही को सौगंध तुम्हें—
तुम लड़ने का आदेश भेजना
लेकिन समझौता मत करना,
मेरी धरती के नेताओं……!

शौर्य-कण

मुकनसिह

कवि-परिचय

नाम : मुकनसिंह एम. ए.

स्थाई पता : कार्यालय राजस्थान विधान सभा, जयपुर

प्रकाशित साहित्य : राठौड़ अमरसिंह री वेलि : पाबूजी राठौड़ री वेलि मुकनसिंह री कही : मेजर शैतानसिंह : (डिंगल दूहा शतक) : आकाशवाणी जयपुर केन्द्र से सम्बद्ध ।

प्रेरणा के स्रोत : प्राचीन डिंगल काव्य परम्परा का निर्वहन— डिंगल भाषा साहित्य शोध ।

दमक दझै दीपक दुनी
देह दिव्य दहझत्त
देस-उवारक देहड़ा
दहझ दहझ दमकत्त

केसरिया काया करी
काटण कू काळख्ख
पंडित कह ससि पीळियो
पुहुमी अः पारख्ख

● वी.सी तिरयाणी

यह पवित्र धरती !

श्री शंभूदयाल सकसेना

कवि-परिचय

नाम : श्री शंभूदयाल सकसेना
जन्म तिथि : पौष शुक्ल ९, १९५८ वि०
स्थायी पता : नवयुग ग्रंथ कुटीर, बीकानेर
प्रकाशित साहित्य : अनेक ग्रंथ
प्रेरणा के स्रोत : प्रकृति एवं जीवनोपलब्धियाँ

यह धरती पवित्र है,
युग-युगों ने यहा जवांमर्दों के सिर बोये हैं।
प्राणो की खाद ने निरन्तर इसे उर्वर बनाया है।
रुण्ड मुण्डो ने खन्दकों को हमवार किया है।
यहां युद्ध की फसलें हर सुबह-शाम काटी गई हैं।

यह धरती पवित्र है,
नौजवानों के रक्त-बिन्दुओं ने इसके चप्पे-चप्पे को सींचा है।
रणचंडियों की कटारों ने इसमें हल चलाये हैं।
इसके नदी-नालों में उन बड़भागी मां बहनों के आंसू बहते हैं,
जिन्होने हँसते-हँसते अपने पति पुत्रों को देश पर
निछावर होने को भेज दिया है।

यह धरती पवित्र है,
कायरता की अपावन छाया से अछूती।
वीरता और साहस से उछलती इस धरती में खाट पर पड़ कर
मरनेवालों का मिलना अनहोनी घटना है।
युद्धभूमि ही यहां के युवकों की मरण-शैया है।
छल बल इधर बढ़ने में असक्त हैं, नाकाम हैं।

यह धरती पवित्र है,
इस धरती में श्मशान नही होते,
यह तो बलिदानी वीरों की छतरियों का देश है।
यहां कब्रिस्तानों में आंसू बहाने की प्रथा नहीं है।
यहा विजयस्तंभो पर शौर्य के दीपक ही जलाये जाते हैं।

यह धरती पवित्र है,
यह शोर-शराबे की जगह नहीं है।
झूठा प्रचार यहां वर्जित है,
नापाक इरादों को लेकर आनेवालों को एहसास होना चाहिए,
कण-कण इस धरा का पवित्रता का कोष धारण किये है।
यहां कदम रखना गुनाह है।
यहां पग बढ़ाना फना है।

यह धरती पवित्र है,
सत्य की तलवार से यहां अत्याचारों के सिर उतारे गये हैं।
धैर्य की तीक्ष्ण धार से यहां नयाचारों के द्रोही मारे गये हैं।
यहां युद्ध आते भय खाते हैं,
योद्धा इस ओर से कतराते निकल जाते हैं,
मरण को वरण करने में यह धरती प्रवीण है।
इसकी शौर्य-गाथा दुर्धर्ष है, नवीन है।

यह धरती पवित्र है,
यहां के शिशु सिंह-शावकों के कान उमेठा करते हैं।
यहां के बालक वनबिलावों की मूछें मरोड़ते हैं।
यहां पालनों के समीप रण-वाद्य घहरते
और प्रयाण गीत गाये जाते हैं।
सिकन्दर से विजेता यहां आकर पछताते हैं।

यह धरती पवित्र है,
परदेसियों की आंखें यहां अचरज से कौंध जाती हैं।

यहां के लड़ाके बांके लोहे-फौलाद के टैंकों को हलाक करते हैं।
जेट बमवारों को बटेर-सा झपट लेते हैं।
कन्याकुमारी से कश्मीर तक यहां डालों में फूल खिलते हैं।

यह धरती पवित्र है,
यहां वीरों की खेती होती है।
यहां शूरों की पौध उगती है।
यहां धर्मों को खुली छूट है।
मुक्त-विचारों की यहां भरपूर लूट है।
आजादी की यह पुण्य भूमि अविभक्त है, अटूट है।